प्रकाशक का निवेदन

'मीरा और उन की प्रेमवाणी' को हम जिस रूप में निकालना चाहते थे युद्ध जनित कठिनाइयों के कारण हम उस रूप में इसे नहीं निकाल सके। पुस्तक में जो त्रुटियाँ रह गयी हैं उनका सुधार अगले संस्करण में होगा। आशा है, सहृदय पाठक विषम परिस्थितियों को ध्यान में रख हमारी असमर्थता के लिये क्षमा करेंगे।

अयोध्या सिंह

मीरांबाईकी जीवनी

प्रेमकी अनन्य पुजारिन

मीराबाईने अपनी अनन्य प्रेमोपासनाके वलपर भारतीय साधना तथा हिन्दी-साहित्यके इतिहासमें अप्रतिम स्थान प्राप्त कर लिया है। एक समृद्ध राजपरिवारमें उनका जन्म हुआ था ('राठाड़ांकी धीयड़ीजी') तथा राजपूतानेके सबसे प्रसिद्ध राजकुलमें उनका विवाह हुआ था ('सीसोद्यांके साथ'), फिर भी उन्होंने समस्त राजवैभव त्यागकर वैराग्य धारण किया, और घोषित किया—

मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई। (पद ८)

उन्होंने माणिक-मोती पहननेसे इनकार कर दिया, सब शृंगार तज दिया, और छापा-तिलक बनाकर गलेमें दोहरी माला तथा कुटकी डाल ली।[१] वे नित्यप्रति हरिजीके मन्दिरमें चुटकी

---

१ माणिक मोती परत न पहिरूं, मैं कब की नटकी।
गेणो तो म्हारो माला दोवड़ी, और चन्दनकी कुटकी। (पद १६०)
छापा तिलक बनाइया तजिया सब सिंगार। (पद १५३)

दे-देकर नाचा करती थी।[१] इस प्रकार हरि-कीर्तनमें रमे हुए उनके मुखसे जो स्वाभाविक हृदयोद्गार निकलते थे, वे ही पद भक्तोंके कंठ-कंठसे प्रचारित होते हुए आज हिन्दी-साहित्यकी अमूल्य निधि बन गये हैं।

जन्म

मीराबाई जोधपुर रियासतके संस्थापक राव जोधाजी (सन् १४१५—१४८८ ई०) के पुत्र राव दूदाजी (सन् १४४०—१५१५ ई०) की पौत्री तथा रत्नसिंह (मृ० सन् १५२७ ई०) की इकलौती पुत्री थीं। राव दूदाजीने अपने पिताके जन्मकालमें ही अजमेर के सूबेदारसे मेडता प्रान्त छीन लिया था, और वहा मेडता नगर (१४८८ ई०) बसाया था। बादमें वह प्रान्त उन्हें अपने पितासे जागीर-स्वरूप मिल गया, और तब उन्होने मेडता (जोधपुरके ३५ मील उत्तर-पूर्व) में अपनी राजधानी बनाई। इसीलिये उनके वंशज मेडतिया* राठौड कहलाये। रत्नसिंह राव दूदाजीके चतुर्थ पुत्र थे। उन्हें अपने पितासे १२ गाव जीवन-निर्वाहके लिये जागीर स्वरूप मिले हुए थे, जिनमें एक कुडकी या चोकडी गावमें अनुमानत सन् १५०३ ई० के आस-पास मीराबाईका जन्म हुआ था।[२]

---

१ नित उठ हरिजीके मन्दिर जास्या, नाच्या दे दे चुटकी। (पद १६०)

* मी त्राइ भी अपने दस्तुर कुल्मे मड़तण जीक नामसे प्रसिद्ध थीं।

२ मीराबाइकी निश्चित जन्मतिथि ज्ञात नहीं है, अत विविध लेखकोंने

माताका देहान्त

मीराबाईकी माताका देहान्त बचपनमे ही हो गया था, अत. उनका लालन-पालन मेडतेमे ही पितामह राव दूदाजीकी गोदमे हुआ। राव दूदाजी परम वैष्णव तथा चतुर्भुजके अनन्य भक्त थे, अत. उनके पास रहनेसे मीराके हृदयमे भी बचपनसे ही भगवद्भक्ति उत्पन्न हो गई।

विविध अनुमान लगाये हैं। राव जयमल (रत्नसिंहके बड़े भाई वीरमजीके पुत्र) मीराके चचेरे भाई थे। दोनोंका पालन पोषण पितामह राव दूदाजीकी गोदमें हुआ था। जयमलका जन्म सन् १५०० ई० मे हुआ था। मीरा उनसे कुछ ही छोटी रही होंगी। इसी आधारपर मीराका जन्म सन् १५०३ ई० के आसपास होनेका अनुमान लगाया गया है।

कुछ लेखकोंने मीराका जन्म स० १५५६ के आसपास माना है। इसे माननेमें एक कठिनाई है। मीराका विवाह राणा सांगा (जन्म स० १५२९ = सन १४८२ ई०) के पुत्र भोजराजसे हुआ था। यदि मीराका जन्म स० १५५६ के आसपास मानते हैं, तो भोजराजका जन्म, उन्हे मीरासे २-३ वर्ष बड़ा मानकर, स० १५५३ (सन् १४९६ ई०) के आसपास मानना पड़ता है। इसका अर्थ यह हुआ कि भोजराजके जन्मके समय राणा सांगा की आयु केवल १३-१४ वर्ष थी, जो ठीक नहीं जान पड़ता।

मेकालिफने मीराका जन्म सन् १५०४ ई० (स०१५६१) के आसपास माना है। (दी लीजेंड्स आव मीराबाई, इण्डियन एन्टीक्वारी, १९०३ ई०)

'वालपनेकी प्रीत'

श्री गिरधरलालमे मीराकी लगन लगनेके सम्बन्धमे कुछ किंवदन्तिया प्रचलित है, जो वडी ही रोचक हैं। कहते हैं, जब मीरावाई बालिका थीं, उनके पिताके घर एक साधु आकर ठहरा। उसके पास श्री गिरधरलालकी एक वडी सुन्दर मूर्त्ति थी। मीरा-वाई उस सुन्दर मूर्त्तिको लेनेके लिये मचलने लगीं। साधुने मूर्त्ति नहीं दी और चला गया। मीराने हठपूर्वक अपना खाना-पीना छोड दिया। उधर साधुको स्वप्न हुआ कि 'मूर्त्ति' मीराके हाथ सौंप दो। अत विवश होकर साधु वापस लौटा, और उसने मूर्त्ति मीराको दे दी। मीरावाई मूर्त्ति पाकर वडी प्रसन्न हुई। वह उसे सदा अपने पास रखने लगीं। जहा अन्य वालिकायें अपनी गुडियोका त्योहार मनातीं, मीरा अपने गिरि-धरलालका उत्सव मनाया करती थीं।

एक दूसरी किंवदन्ती है कि मीरा जव पाच-छ वर्षकी थीं, उनके गांवमे एक बारात आई। वर देखकर उन्होंने कुतूहलवश अपनी मातासे पूछा कि मेरा वर कहा है। माताने वालिकाकी वात टालनेके भावसे हँसकर कहा कि मन्दिरमे श्री गिरधर-गोपालकी जो मूर्त्ति है, वही तेरे पति है। उस दिनसे मीरावाई गिरधरगोपालको अपना पति मानकर उनकी सेवा करने लगीं।

मीराबाईने अपने पदोंमे 'वालसनेही' और 'वाल्पनेकी प्रीत' का उल्लेख किया है, जिससे सकेत होता है कि वाल्यावस्थामे ही उन्हे श्री गिरधरलालका इष्ट हो गया था।

विवाह तथा वैधव्य

सन् १५१५ ई० में मीराके पितामह राव दूदाजीका देहान्त हो गया, और वीरमदेव (रत्नसिंहके बड़े भाई) उनके उत्तराधिकारी हुए। उन्होंने सन् १५१६ ई० के आसपास (अनुमानतः) मीरांका विवाह राणा सांगा (जन्म १४८२ ई०) के पुत्र भोजराज से कर दिया।* पर मीरांबाईका वैवाहिक जीवनका सुख क्षणिक रहा। विवाहसे कुछ ही साल बाद (अनुमानतः सन् १५२३ ई०

---

* कर्नल टाडने सबसे पहले यह भ्रांति फैलाई कि मीराका विवाह राणा कुम्भ (मृ० सन १४६७ ई०) से हुआ था, जिससे उनका समय एक शताब्दी पहले चला जाता है। महाराणा कुम्भके बनवाये हुए कुम्भ स्वामी के मन्दिरके पास ही एक छोटा मन्दिर देखकर, जो जनश्रुतियोंके अनुसार मीराबाईका बनवाया हुआ कहा जाता था, कर्नल टाटने इस बातपर विश्वास कर लिया कि *मीराबाई राणा कुम्भकी रानी थीं।* वस्तुतः *यह दूसरा आदि* वाराहका मन्दिर भी राणा कुम्भने ही स० १५०७ (सन १४६० ई०) में बनवाया था। राणा कुम्भ सन् १४६७ ई० में मारे गये, और उसके एक साल बाद मीरांके पितामह राव दूदाजीने मेड़ता अपनी राजधानी बनाई। कुम्भके मारे जानेके ५९ साल बाद *मीराके* पिता रत्नसिंह *खनवाहके* युद्धमें मारे गये। इसलिये राणा कुम्भसे मीराबाईका विवाह असम्भव है।

श्री हरिविलास सारदाने अपनी पुस्तक 'महाराणा सांगा' तथा श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझाने अपने 'राजपूतोंका इतिहास' में सिद्ध किया है कि मीराका विवाह महाराणा सांगाके पुत्र भोजराजसे हुआ था।

के आसपास) उनके पतिका देहान्त हो गया। इसके बाद ही उनपर दूसरा वज्रपात हुआ। १५२७ ई० में कनवाहके रणक्षेत्रमें बाबरसे युद्ध करते हुए उनके पिता रत्नसिंहने वीरगति पाई। इसके कुछ ही समयके बाद उनके श्वसुर महाराणा सांगाका भी देहान्त हो गया। इस प्रकार मीराबाई आश्रयविहीन हो गईं और स्वभावतया उनकी चित्तवृत्ति वैराग्यकी ओर उन्मुख हुई। श्री गिरधरलालका इष्ट उन्हें बचपनसे ही था। कहते हैं कि जब वह विवाहके बाद ससुराल गई थीं, तो श्री गिरधरलालकी मूर्त्ति भी अपने साथ लेती गई थीं, और पतिके जीवनकालमें ही उसकी पूजा-अर्चना किया करती थीं।* पहले पति, फिर पिता और अन्तमें श्वसुरकी मृत्यु हो जानेपर उनके हृदयमें संसारसे पूर्ण विरक्ति हो गई, और वह अपना सारा समय भगवद्भजन तथा साधु-सत्संगमें बिताने लगीं।

---

* प्रियादासने लिखा है कि श्वसुरके घर देवी पूजनपर मीराबाई और उनकी सासमें कहा-सुनी हो गई थी। जब उनकी सास उन्हें देवी पूजनके लिये ले जानेको उद्यत हुई, तो उन्होंने कहा कि यह माथा गिरधरलालके चरणोंपर झुक चुका है, और किसीके चरणोंपर नहीं नवेगा। इसपर उनकी सास खिसिया गई, और उन्होंने उनके पतिसे जाकर शिकायत की। राणाने कोपकर उन्हें एकान्तवासका दंड दिया। (भक्तमाल सटीक, पृष्ठ ६९७)

मीराके नाम प्रचलित एक पदमें भी इसका उल्लेख है—

सास—औरज पूजै गोरज्या जी, थे क्यूं पूजो न गोर।

हरि-कीर्तन

साधु-संतोंका सत्कार करनेमें मीराने लोकलज्जा त्याग दी। वे प्रेमावेशमें पैरोंमें घुंघरू बांधकर तथा हाथोंमें करताल लेकर अपने प्रभुके आगे नाचा करती थीं। उनके देवर महाराणा रत्नसिंह (महाराणा सांगाके उत्तराधिकारी) ने तथा परिवारके अन्य लोगोंने उन्हें बहुत समझाया कि ये बातें राजवंशकी मर्यादा के विरुद्ध हैं। पर उन्होंने घोषित कर दिया :—

राणाजी म्हें तो गोविंद का गुण गास्यां।
चरणामृत को नेम हमारो, नित उठ दर्शन जास्यां।
हरि मन्दिरमें निरत करास्यां, घूंघरियां घमकास्यां।
रामनाम का झाझ चलास्यां, भवसागर तर जास्यां।
यह संसार बाड़का कांटा, ज्यां संगत नहीं जास्यां।
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर, निरख परख गुण गास्यां।*

इस प्रकार घरके लोगोंके कहने-सुननेका उनपर कोई प्रभाव

मन बछत फल पावस्यो जी, थे क्यूं पूजो और।
मीरा—नहिं हम पूजा गोरज्या जी, नहिं पूजा अनदेव।
परम सनेही गोविंदो, थे काई जानो म्हांरो भेव।

पर ये सब दंतकथायें नितान्त कल्पित मालूम पड़ती हैं। सम्भवतः श्री गिरधरलालके प्रति मीराबाईके अनन्य प्रेमको दिखानेके लिये ही भक्तोंने ऐसी कथायें गढ़ ली।

* पद १६८।

नहीं पड़ा, और उनकी हरिभक्ति दिन-पर-दिन बढ़ती गई। धीरे-धीरे उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और बहुतसे लोग उनके दर्शनों तथा सत्संगके लिये आने लगे।

क्या रैदास गुरु थे?

कहते हैं, मीरांबाईके दीक्षागुरु महात्मा रैदास थे।* मीरांबाई के नामपर प्रचलित तीन-चार पदोंमें रैदासका नाम आया है :—

गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्हीं ज्ञानकी गुटकी।
(पद १६०)

रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी।
(पद १३२)

गुरु रैदास मिले मोहिं पूरे, धुरसे कमल भिड़ी।
(पद ६८)

मीराने गोविंद मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास।
(पद १४८)

पर मीरांबाईका रैदासकी शिष्या होना सम्भव नहीं जान पड़ता। रैदास रामानन्दी सम्प्रदायके थे, मीरां कृष्ण-भक्त थीं। रैदासका समय निश्चित नहीं है; पर वे कबीरदास (१४ वीं शताब्दी) के समकालीन माने जाते हैं। अतः उनका आविर्भाव मीरांबाईसे एक शताब्दी पहले हुआ था। प्रियादासने लिखा है

---

* ऐन आउटलाइन आव रिलीजस लिटरेचर आव इण्डिया, जे० एन० फरक्वहर, पृष्ठ ३०६।

कि रैंदास रानी झाली (राणा सागाकी मा) के गुरु थ । मीरानाई का उस समय जन्म भी नहीं हुआ था। अत हमे यही मानना पडता है कि या तो उक्त पद प्रक्षिप्त हैं, या एक समय मीरानाई पर सत रैंदासकी वानीका वहुत प्रभाव पडा था, और इसीलिये उन्होंने रैंदासको अपना गुरु मान लिया।

मीरांवाई और पुष्टिमाग

कुछ लोगोंकी धारणा है कि मीरानाई (सन् १४७६-१५३० ई०) पुष्टिमार्गमे दीक्षित हुई थीं। पर यह धारणा भी भ्रमपूर्ण है। सम्भवत मेवाडमे वल्लभ सम्प्रदायको वादमें जो लोकप्रियता मिली, उसीके कारण मीराबाईका भी उक्त सम्प्रदायसे सम्वन्ध जोड लिया गया। पर 'चौरासी वैष्णवनकी वार्त्ता' के ही अनुसार मीरावाई वल्लभ सम्प्रदायसे उदासीन थीं। 'वार्त्ता' के रचयिताका कहना है कि मीरावाईके पुरोहित रामदास वल्लभाचार्यके सेवक थे

> 'सो एक दिन मीरानाईके श्री ठाकुरजीके आगें रामदासजी कीर्तन करत हुते। सो रामदासनी श्री आचार्यजी महाप्रभूनके पद गावत हुते। तन मीरानाई वोली जो दूसरो पद श्री ठाकुरजीकोगावों। तन रामदासजीने कह्यो मीरावाई सो जो अरी यह कोन को पद है। जा आज ते तेरे मुहडो कवहू न देखू गो। मीरानाई ने वहुत वुलाये परि व रामदासजी आये नहीं। तव घर वैठे भट पठाई सोई फेरि दीनी और कह्यो जो राड तेरो

श्री आचार्यजी महाप्रभून ऊपर समत्व नहीं जो हमको तेरी वृत्ति कहा करनी है।'१

एक दूसरी 'वार्त्ता' में बताया गया है कि एक बार वल्लभाचार्य के 'निज सेवक' गोविंद दुबे मीरांबाईके घर उतर गये, तो वल्लभाचार्यको बुरा लगा, और उन्होंने उन्हें बुलवा भेजा :

'और एक समय गोविंद दुबे मीरांबाईके घर हुते तहां मीरांबाई सों भगवद्वार्त्ता करत अटके। तब श्री आचार्यजी ने सुनी जो गोविंद दुबे मीरांबाईके घर उतरे हैं सो अटके हैं। तब श्री गुसाईंजी ने एक श्लोक लिख पठायो सो एक ब्रजवासीके हाथ पठायो। तब वह ब्रजवासी चल्यौ सो वहां जाय पहुंचौ। ता समय गोविंन दुबे संध्या-वन्दन करत हुते। तब ब्रजवासीने आयके वह पत्र दीनों। सो पत्र वाचिके गोविंद दुबे तत्काल उठे। तब मीरांबाईने बहुत समाधान कियो, परि गोविंद दुबेने फिर पाछे न देख्यो।'२

इसी प्रकार कृष्णदास अधिकारी (वल्लभाचार्यके सेवक) ने मीरांबाईकी श्रीनाथजीके लिये भेंट की हुई मुहरें यह कहकर लौटा दी कि 'जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेंट हम हाथ ते छूवेंगे नहीं।'३

---

१. चौरासी वैष्णवनकी वार्त्ता, पृष्ठ २०७-२०८। २. वही, पृष्ठ १६२।
३. वही, पेज ३४२-३४३।

दो सौ बावनं वैष्णवनकी वार्त्ता

इन वार्त्ताओंसे स्पष्ट है कि मीरांबाई वल्लभाचार्यकी शिष्या नहीं बनी थीं। 'दो सौ बावन वैष्णवनकी वार्त्ता' में मीरांबाईके नाम का उल्लेख न करके राजा जयमलकी बहिनके रूपमें उनका उल्लेख किया गया है। वार्त्तामें कहा गया है कि श्री गोसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य हरिदासने मीरांबाईको पुष्टिमार्गमें दीक्षित किया :

> 'सो वे हरिदास वनिया मेरता गाममे रहते। वा गाममें एक ही वैष्णव हते। और वा गामको राजा जैमल हतो। सो स्मार्त-धर्ममे हतो। एकादशी पहेली करते हते। और जैमल राजाकी वेनको घर हरिदास वनियाके सामें हुतो। सो जब श्री गुसाईंजी हरिदासके घर पधारे हुते तब जैमलकी वेन कुं बारीमे सू श्री गुसाईंजीके साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भये। जब जैमलकी वेनने पत्र द्वारा श्री गोसाईंजीको विनती लिखके पत्र द्वारा सेवक भई। काहे तें वे पड़दामें से वाहर नहीं निक्सते जासूं पत्र द्वारा सेवक भये। इतनेमें श्री गुसाईंजी द्वारका सों मेरते पधारे और सब कुटुंब सहित गाम सहित जैमलजी वैष्णव भये।'*

पर 'दो सौ बावन वैष्णवनकी वार्त्ता' कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं है, अत: इस वार्त्ताकी प्रामाणिकतामें भी संदेह है। जहां तक

---

* दो सौ वैष्णवनकी वार्त्ता, पेज ६४-६९।

राणाने समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, संतां हाथ बिकानी।

ऊदाबाई—भाभी बोलो वचन विचारी।
साधो की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी।
छापा तिलक गलहार उतारो, पहिरो हार हजारी।
रतन जड़ित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी।
मीरांजी थें चलो महलमें, थाने सोगन म्हारी।

ज्ञात हुआ है, मीरांबाई वैष्णव अवश्य थीं, पर उन्होंने किसी सम्प्रदाय-विशेषमें दीक्षा नहीं ली थी।

स्वजनों के अत्याचार

राणा रत्नसिंह सन् १५३१ ई० में मारे गये और उनके सौतेले भाई विक्रमादित्य राणा हुये। विक्रमादित्य बहुत ही अयोग्य शासक थे। उन्हें मीरांबाईका संत-समागम तथा हरिनाम-कीर्तन अच्छा न लगता था, और उन्होंने उनपर अनेक अत्याचार किये। मीरांबाई के अनेक पदोंमें जो राणा सम्बोधन है, वह सम्भवतः इन्हींके लिये है।

ऊदाबाईका प्रबोधन

(कहते हैं, राणाने पहले मीरांबाईकी ननद ऊदाबाईको समझाने के लिये भेजा)

ऊदाबाई—थनि बरज-बरज मैं हारी, भाभी मानो बात हमारी।
राणे रोस कियो थां ऊपर, साधोंमें मत जा री।
साधों रे संग बन-बन भटको, लाज गुमाई सारी।
बड़ा घरा थें जनम लियो छै, नाचो दे-दे तारी।
बर पायो हिंदवाणे सूरज, थें काईं मन धारी।
मीरा गिरधर-साध संग तज, चलो हमारी लारी।

मीरांबाई—मीरां बात नहीं जग छानी, ऊदा समझो सुघर सयानी।
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ग्यानी।
संत चरणकी सरण रैन-दिन, सत्त कहत हूं बानी।

राणाने समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, संता हाथ बिकानी।

ऊदाबाई—भाभी बोलो वचन विचारी।
साधो की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी।
छापा तिलक गलहार उतारो, पहिरो हार हजारी।
रतन जडित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी।
मीराजी थें चलो महलमे, थाने सौगन म्हारी।

मीराबाई—भाव भगत भूषण सजे, सील संतो सिंगार।
ओढी चूनर प्रेमकी, गिरधरजी भरतार।
ऊदाबाई मन समझ, जावो अपने धाम।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमे न तासूं काम।१

विषका प्याला

(राणाने कुपित होकर विष भरा प्याला भेजा, पर मीरा उसे चरणामृत मानकर पी गई)

विषको प्याला राणाजी मेल्यो, द्यो मेडतणीने पाय।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविंद रा गाय।२

(राणाने पिटारेमे साप भरकर भेजा, पर मीराने जब उसे गले मे डाला, तो हार बन गया)

साप पिटारो राणाजी भेज्या, द्यो मेडतणी गल डार।
हँस हँस मीरा कठ लगायो, यो तो म्हारे नौसर हार।३

एक अन्य पदमे संकेत है कि मीराने जब सापका पिटारा छुआ, तो उसमे शालिग्राम निकले

साप पिटारा राणा भेज्यो, मीरा हाथ दियो जाय।
न्हाय-धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ।४
राणा तलवार लेकर मारने दौडे, पर मीरा अविचलित रहीं :
जब मैं चली साधको दरसण, तब राणो मारण कू दौरयो ।५
(पद १५८)

---

१. पद १५०। २. पद १५२। . वही। ४ पद १७०।

५ प्रियादासने भक्तमालकी टीकामें लिखा है कि राणाने मीराके चारों ओर अपने चर लगा दिये। एक बार मीरा जब मंदिरके पट बन्दकर अपने गिरधारीलालसे हंस-बोल रही थीं, उन्होंने जाकर राणाको सूचना दी। राणा तलवार लेकर दौड़ पड़े। बोले—

जाके संग रंग भाजि करत प्रसंग नाना ,
कहां वह नर गयौ, वेगि दै बताइयै।

मीराने गिरधारीलालकी मूर्त्तिकी ओर संकेतकर कहा —

आगे ही विराजे, कछू तो सों नहीं लाजै ,
अभू देख सुख साजे, आरौ खोलि दरसाइयै।

इसपर राणा खिसिया गये और उलटे पैर लौट गये।

इसी प्रकार उन्होंने एक कुटिल साधुके मीरासे नीच प्रस्ताव करनेकी भी कथा दी है—

विषई कुटिल एक भेष धरि साधु लियौ ,
कियौ यों प्रसंग मो सों अंग संग कीजिये।
आज्ञा मो को दई आप लाल गिरधारी अहो ,

(राणाने मीराके लिये सूलीकी सेज भेजी, पर वह उसपर ऐसे सो गईं, जैसे फूलोंकी सेज हो :)

सूल सेज राणाने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय।
साझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय।१

इन किंवदंतियोंमें कहा तक सचाई है, कहा नहीं जा सकता। हां, इनसे इतना अवश्य सिद्ध होता है कि श्री गिरधरके चरणोंमें मीराकी अनन्य भक्ति थी, और अनेक विपत्तिया सहनेपर भी वे अपने पथपर डटी रहीं।

श्री देवीप्रसाद मुंसिफ मीराको जहर दिये जानेकी घटना सत्य मानते थे। उन्होने लिखा है—'मीराबाईको राणा विक्रमाजीतके दीवान कौम महाजन बीजावर्गीने जहर दिया था। मीराबाईका श्राप बीजावर्गी कौमको अब तक लगा हुआ है और वे मानते हैं कि उस श्रापसे हमारी औलाद और दौलतमे तरक्की नहीं होती है।'२

सीस धरि लई करि भोजन हू लीजिये।
सन्तनि समाज में बिछाय सेज बोलि लियौ ;
सक अब कौन को निसंक रस भीजिये।
सेत मुख भयो, विषै भाव सब गयौ,
नयौ पायन पै आय मों को भक्तिदान दीजियै।

१, पद १७०।

२ बाबू शिवनन्दन सहाय द्वारा 'श्री गोस्वामी तुलसीदास'में पेज ११३-१४ पर उद्धृत।

पर इन घटनाओंकी पुष्टिमें हम मीराके नामपर प्रचलित पदों तथा भक्तोंके उल्लेखोंके अलावा कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं उपस्थित कर सकते।

क्या तुलसीदाससे पत्र-व्यवहार हुआ था?

कहते हैं, मीराबाईने स्वजनोंके उत्पातोंसे दुखी होकर तथा साधु-समागम और ईश्वर-भजनमें बाधा पडते देखकर गोस्वामी तुलसीदासको पत्र लिखा और उनसे परामर्श माँगा।

मीराबाईका वह पत्र निम्न प्रकार बताया जाता है :—

श्री तुलसी सुख निधान, दुख हरन गोसाईं।
बारहि बार प्रणाम करूं, अब हरो सोक समुदाई॥
घरके स्वजन हमारे जेते, सवन उपाधि बढ़ाई।
साधु संग अरु भजन करत, मोहिं देत कलेस महाई॥
बालपने ते मीरा कीन्हीं, गिरधरलाल मिताई।
सो तौ अब छूटत नहीं क्यो हूं, लगी लगन बरियाई॥
मेरे मात पिताके सम हौ, हरि भक्तन सुखदाई।
हमको कहा उचित करिबो है, सो लिखियो समुझाई॥

कहते हैं, इसके उत्तरमें गोस्वामी तुलसीदासने निम्न पद और सवैया लिख भेजा :—

जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषन बंधु, भरत महतारी।

बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रजबनिता, भये सब मंगलकारी ॥
नातो नेह राम सों मनियत, सुहृदय सुसेव्य जहां लौं ।
अंजन कहा आंख जो फूटै, बहुतक कहौं कहां लौं ॥
तुलसी सो सब भांति परम हित, पूज्य प्रान ते प्यारो ।
जासों बढ़े सनेह रामपद, एतो मतो हमारो ॥
सो जननी सो पिता सोई भ्रात, सो भामिन सो सुत सो हित मेरो ।
सोई सगो सो सखा सोइ सेवक, सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान, कहां लौं बनाई कहौं बहुतेरो ।
जो तजि गेहको देहको नेह, सनेह सो रामको होय सबेरो ॥

बाबा वेणीमाधवदासने अपने 'गोसाईं-चरित' में मीराबाईके पत्रका उल्लेख करते हुए लिखा है :—

तब आयो मेवाड़ ते विप्र नाम सुखपाल ।
मीराबाई पत्रिका लायो प्रेम प्रवाल ॥
पढ़ पाती उत्तर लिखे गीत कवित्त बनाय ।
सब तजि हरि भजियो भलो, कहि दिय विप्र पठाय ॥१

पर गोसाईं-चरितकी प्रामाणिकता संदिग्ध है । श्री तुलसीदासका समय समान्य रूपसे सन् १५३२ ई० से सन् १६२३ ई० तक माना जाता है ।२ उन्होंने अपना रामचरित-मानस सन् १५७४ ई०मे

१ गोसाईं-चरित, दोहा ३१, ३२ । २ इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, जिल्द २२, पृष्ठ ५४१ ।

लिखना आरम्भ किया, जिसके बाद उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली। राणा विक्रमादित्य, जिनके सम्बन्धमें कहा जाता है कि उन्होंने मीराबाईको अनेक यातनाये दीं, सन् १५३६ ई०में मार डाले गये। अतः यदि मीराबाईने तुलसीदासको कोई पत्र लिखा होगा तो वह राणा विक्रमादित्यके राज्यकालमें ही लिखा होगा, जिन्होंने उनके हरि-भजनमें बाधा डाली। पर उस समय तुलसीदासकी अवस्था केवल ४ वर्षकी थी। यदि हम 'गोसाईं-चरित' पर विश्वासकर तुलसीदासकी जन्मतिथि सन् १४९७ ई० भी मान लें तो विक्रमादित्यके मारे जानेके समय तुलसीदासकी आयु ३१ वर्ष थी। उस समय तक वह एक अज्ञातनामा व्यक्ति थे—'गोसाईं चरित' के ही अनुसार उनकी पहली रचना गीतावली सन् १५७१ ई० में लिखी गई, अतः उन्हें मीराबाईका पत्र लिखना नितांत असम्भव है।

मायकेमें

मीराबाईके कष्टोंकी कथा सुनकर उनके पितृव्य, काका वीरमदेवने उन्हें मेड़ता बुला लिया।[१] मेड़तेमें मीराबाई निर्विघ्न रूपसे

१, मीरांने एक पद (पद १५१) में संकेत है कि मीरांने स्वयं राणासे पीहर भेजनेका प्रस्ताव किया —

विष रा प्याला राणाजी भेज्या, दीजो मेड़तणीके हाथ।
कर चरणामृत पी गई, म्हारा सबल धणीका साथ।
विषका प्याला पी गई, भजन करै उस ठौर।
थारी मारी ना मरू, म्हारो राखणहारो और।

भजन-पूजनमें मग्न रहने लगीं। कहते हैं, राजमहलके जिस भाग में व उस समय पूजा किया करती थीं, वह कदाचित् चतुर्भुज भगवानके मन्दिरमें सम्मिलित है, और आज भी 'मीराबाईकी भोजनशाला' के नामसे खण्डहरके रूपमें वर्त्तमान है।

तीर्थाटन और जीव गोस्वामीसे भेंट

पर व यहा भी अधिक समय तक शातिसे नहीं बैठ सकीं। मेड़ता और जोधपुरके राज्योंमें अनबन चल रही थी। सन् १५३८ ई० में जोधपुरके राव मालदेवने मेड़ता वीरमदेवसे छीन लिया।

> गणोची मापर गोयो र माफ ए न मत।
> मारया पगछिा र गमो म्हान द ना पीहर मल।

इसी प्रसंग आगे ग त किया गया है कि मीरा ॰ब रथप च॰क तथा ऊटोंपर सामान लदवाकर चलने लगी तो गणार सान्निय भेजा और कहा— एक ही दौड़में जाओ। अरे यह ता घु ग ता ण व नेत ी छा र टकर राठौड़के घर चली।

पर मीरा —

> साड्या पाछा फर्या र परत न दस्या पाव।*
> का सुगपण नागरी म्हार कुण गाण कुण राव।
> समारो निंदा करे दुखिया सब ससार।
> कल राते ही त्याग गी, मी ो थे जो भया ना र्वार
> राती माती प्रमकी विष भगत को माड़।
> राम अमल माता रह तन मीरा राठौड़।

इससे मीराको बडी ग्लानि हुई, और उन्होने मेडता भी त्यागकर तीर्थ-यात्रा करनेकी ठानी। तीर्थ-पर्यटन करती हुई मीरा वृन्दावन पहुचीं। वहा उनके मनमे चैतन्य सम्प्रदायी श्री जीव गोस्वामी का दर्शन करनेकी इच्छा हुई। जीव गोस्वामीने किसी स्त्रीका मुख न देखनेकी प्रतिज्ञा की थी। उन्होने पहले मिलनेसे इनकार कर दिया और कहला भेज कि मै स्त्रियोसे नहीं मिलता। इस पर मीराने उत्तर भेजा—'मै तो वृन्दावनमे सबको सखी रूप जानती थी, पुरुष केवल श्री गिरधरलालजीको समझती थी। आज मालूम हुआ कि उनके और भी पट्टीदार है।' इस उत्तरसे गोस्वामीजी वडे लज्जित हुए। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा तोड दी, और प्रेमावेशमे नंगे पैर मीरासे मिलनेके लिये दौडे। मीराबाई कुछ दिन वृन्दावनमे रहीं और इसके बाद द्वारिका चली गई।

मेवाड़से निमन्त्रण

मीराबाईके मेवाड त्यागनेके बाद वहा अनेक विपत्तिया आई। पहले वणवीर और फिर उदयसिंह मेवाडकी गद्दीपर बैठे। कहते है, उन्होने मेवाडपर पडनेवाली विपत्तियोका कारण मीराबाईका वहासे रूठकर चला जाना माना। उन्होने मीराबाईको लौटानेके लिये अपने ब्राह्मण द्वारिका भेजे। ब्राह्मणोने मीराबाईसे कहा कि जब तक आप न चलेंगी, हम अन्न-जल ग्रहण न करेंगे। विवश होकर मीराबाई उनके साथ चलनेको तैयार हो गई। वे रणछोरजीसे आज्ञा लेनेके लिये मन्दिरमे गई, और कहते है कि वहीं मूर्त्तिमे

समा गईं। कहते हैं, मीराके अन्तिम दो पद निम्नप्रकार हैं, जिन्हें गाकर वह मूर्त्तिमें समा गईं—

(१)

हरि तुम हरो जनकी भीर।
द्रौपदीकी लाज राख्यो तुम बढ़ायो चीर।
भक्त कारन रूप नरहरि धर्‌यो आप सरीर।
हिरनकस्यप मारि लीन्हो धर्‌यो नाहिन धीर।
बूडते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर।
दास मीरा लाल गिरधर दुख जहां तहं पीर। (पद १६)

(२)

साजन सुध ज्यों जाने त्यों लीजे हो।
तुम विन मेरे और न कोई, कृपा रावरी कीजे हो।
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, यों तन पल-पल छीजे हो।
मीरा कह प्रभु गिरधर नागर, मिलि विछुरन नहिं कीजे हो।
(पद ८४)

अकबरका दर्शनोंके लिये जाना

मीरांबाईकी मृत्यु-तिथिके सम्बन्धमें विद्वानोंमें मतभेद है। मुंशी देवीप्रसादने उनकी मृत्यु-तिथि सन् १५४६ ई० मानी है।[१]

१. राठौड़ोंका एक भाट जिसका नाम भूदान है, गांव लूणवे, परगने मारोट इलाके मेवाड़में रहता है। उसकी जबानी सुना गया कि मीराबाईका देहान्त संवत् १६०३ में हुआ था और कहां हुआ, यह मालूम नहीं। मीराबाईका जीवन चरित, पृष्ठ २८।

जनश्रुतियोंके अनुसार अकबर बादशाह तानसेनको लेकर मीरांबाई के दर्शनोंके लिये गये थे। प्रियादासने भी लिखा है—

रूपको निकाई भूप अकबर भाई हिये,
लिये संग तानसेन देखिबेको आये हैं।१

शरीर-त्याग

यदि इस जनश्रुतिपर विश्वास किया जाय, तो मीरांबाईकी मृत्यु-तिथि सन् १५४६ ई० माननेमें कठिनाई होती है, क्योंकि उस समय तो अकबरकी अवस्था केवल ४ वर्षकी ठहरती है, और उस अवस्थामें उसका मीराबाईके दर्शनोंके लिये जाना कैसे सम्भव हो सकता है? इसलिये भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने मीरांबाईकी मृत्यु-तिथि सन् १५६३ ई० और सन् १५७३ ई० के बीच मानी थी। उनका कहना था कि उन्होंने यह तिथि उदयपुर-दरबारकी सम्मतिसे निश्चित की थी। इसके अनुसार मृत्युके समय मीरांबाईकी अवस्था लगभग ७० वर्ष ठहरती है, जो असम्भव है। इसलिये अधिकाश विद्वान भारतेन्दु हरिश्चन्द्रकी तिथि ही अधिक सही मानते हैं। गुजराती 'बृहत् काव्य-दोहन' में भी मीरांबाईकी मृत्यु-तिथि सन् १५६३ और १५७३ ई० के बीच मानी गई है।२

---

१. भक्तमाल सटीक, पृष्ठ ७०२।

२. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तो मीरांना तानसेन तथा तुलसीदास साथे ना समागमोने सत्य गणी मीरानो शरीरत्याग स्वत १६२० थी १६३० मध्ये थयानु अनुमाने छे अने तेने बहुजो प्रामाणिक माने छे।—बृहत् काव्य-दोहन, भाग ७, पृष्ठ २४।

मीरांबाईकी रचनायें

पद

मीरांके पदोंकी कोई प्राचीन प्रामाणिक हस्तलिखित पोथी प्राप्त नहीं है और प्राप्त होनेकी कोई सम्भावना भी नहीं है। मीराबाई प्रथमतः कवियित्री न होकर अनन्य प्रेमकी उपासिका थीं। बहुत सम्भवतः अपने गिरधरके आगे कीर्तन करते हुए वह प्रेमावेशमें अपने हृदयोद्गारोंको प्रकट करनेके लिये पद रचना करती रही होंगी। ये पद बहुत समय तक साधु सन्तोंकी मण्डलीमें प्रचलित रहे, इन्हें लिपिबद्ध करनेका कोई प्रयत्न नहीं किया गया। यही कारण है कि आज मीरांबाईके पद स्थिर रूपमें नहीं मिलते। जिन क्षेत्रोंमें वे प्रचलित रहे हैं, वहांकी भाषाकी छाप उनपर स्पष्ट रूपसे दिखाई पड़ती है। मीरांबाईके पद मुख्यतया तीन रूपोंमें मिलते हैं—गुजरातीमें, राजस्थानी (डिंगल) में, तथा हिन्दीमें। इन तीनों प्रदेशोंसे मीरांबाईका सम्बन्ध रहा है। मेड़ता तथा मेवाड़में उनके जीवनका एक बड़ा भाग व्यतीत हुआ, व्रजमण्डल उनके इष्टदेवकी क्रीड़ा-भूमि तो थी ही, वह कुछ समय वृन्दावनमें रही भी थीं, और उनके अन्तिम दिन काठियावाड़में, द्वारिकामें कटे थे। इसलिये इन तीनों प्रदेशोंकी बोलियोंके शब्द उनकी कवितामें मिलना अस्वाभाविक नहीं है। अतः भाषाकी कसौटीपर भी उनके पदोंकी प्रामाणिकता सिद्ध करना सम्भव नहीं है। फिर भी

उनकी विचार-धारा, उनके पदोंके वातावरण आदिका ध्यान रखते हुए उनके नामपर प्रचलित पदोंसे ऐसे पद अवश्य छाटे जा सकते हैं, जिनके सम्बन्धमे सम्भावना की जा सके कि वे उनके प्रतीक हो सकते है। खेद है कि किसी हिन्दी-विद्वानने यह कार्य अपने हाथमे नहीं लिया है।

मीराबाईके पदोंका सबसे उत्तम संग्रह अभी तक वेलवेडियर प्रेसका है। इसमे १५० से कुछ अधिक पद है। गुजराती 'काव्य-दोहन' मे मीराबाईके लगभग १०० पद संग्रहीत है। इधर राजस्थानमे कुछ हिन्दी-विद्वान मीराबाईके पदोंका संग्रह कर रहे है, और कहा जाता है कि ५०० पद तक संग्रहीत हो चुके है। इस संग्रहके प्रकाशमे आनेपर ही कहा जा सकेगा कि ये पद कहा तक प्रामाणिक कहे जा सकते है।

पदोंका वर्गीकरण

मीराबाईके जो पद प्रकाशित हो चुके है, उन्हें हम नियमानुसार ५ वर्गोंमे बाट सकते है : –

(१) विनय और प्रार्थनाके पद – इनकी संख्या थोडी ही है।

(२) विरह और प्रेमके पद – इनकी संख्या सबसे अधिक है।

(३) होली और सावन आदि शीर्षकोंके अन्तर्गत आनेवाले पद – इनमे रहस्यवादकी झलक पाई जाती है।

(४) सन्त वातावरणसे प्रभावित पद – काव्यकी दृष्टिसे इनका महत्व नहींके बराबर है। हा, मीरांबाईकी विचार-धाराका निरूपण करनेमे ये अवश्य सहायक है।

(५) जीवनपर प्रकाश डालनेवाले पद—इनमें अधिकांश पद 'राणा' को सम्बोधित हैं। पहले यह खयाल किया जाता था कि ये पद उन्होंने अपने पतिको सम्बोधित करके लिखे हैं। इसीसे अनुमान लगाया जाता था कि मीराबाईका विवाहित जीवन सुखी नहीं था और उनका गिरधरका प्रेम दम्पति-प्रेममें बाधक था। पर नई खोजोंसे सिद्ध हो गया है कि मीराबाई विवाहके कुछ ही साल बाद विधवा हो गईं थीं, और उन्हें पीड़ा पहुंचानेवाले उनके देवर राणा विक्रमादित्य थे। अतः ये पद इन्हींको सम्बोधित मानना चाहिये। बहुत सम्भव है कि इस रूपमें मिलनेवाले बहुतसे पद बादमें उनके सम्बन्धमें प्रचलित किंवदन्तियोंके आधारपर रच लिये गये हों, इसलिये ऐसे पदोंकी प्रामाणिकता बहुत अधिक सन्दिग्ध है।

नरसीजी रो माहेरो

मीराबाईकी रचनाओंमें उनके प्रकीर्णक पद ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। पदोंके अलावा उनके नामपर प्रचलित कुछ अन्य रचनायें भी प्रकाशमें आई हैं, जिनमें 'नरसीजी रो माहेरो' मुख्य है। 'माहेरो' राजस्थान तथा गुजरातमें 'भात न्योतने' को कहते हैं। लड़की अथवा बहनकी सन्तानके विवाहके अवसरपर, उसके पिताके घरके लोग जो पहरावनी ले जाते हैं, उसे ही 'माहेरा' कहते हैं। इस पुस्तकमें गुजरातके प्रसिद्ध कवि नरसी मेहताका अपनी पुत्री नानीबाईके यहां 'माहेरा' ले जानेका

वर्णन है। पुस्तक मीरा और उनकी एक सखी 'मिथुला' में वार्त्तालापके रूपमें लिखी गई है। साहित्यिक दृष्टिसे यह पुस्तक महत्वपूर्ण नहीं है।

अन्य रचनायें

महामहोपाध्याय गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझाने लिखा है कि मीराबाईने 'राग गोविन्द' नामसे कविताका एक ग्रन्थ रचा था, पर इस ग्रन्थका कोई पता नहीं चलता है। मिश्र बन्धुओंने मीराबाईके नामपर 'राग सोरठ पद संग्रह' नामक ग्रन्थका उल्लेख किया है। सोरठ रागके कुछ पद मीराके प्रकाशित संग्रहोंमें भी मिलते हैं। पहले यह धारणा थी कि गीत गोविन्द'की टीका भी मीराकृत है, पर अब प्रकट हुआ है कि वह महाराणा कुम्भकी बनाई हुई है। इसी प्रकार बहुत सम्भवत मीराबाईके नामपर प्रचलित अन्य रचनाओंकी भी परीक्षा करनेपर ज्ञात हो कि वे किसी अन्यकी रचनायें हैं।

मीराँबाईकी विचारधारा

मीराँबाईके समय प्रचलित विविध विचारधारायें

मीराबाईके आविर्भावके समय उत्तर भारतमें भक्ति और ज्ञानकी अनेक धारायें प्रचलित थीं। मीराबाईसे लगभग एक शताब्दी पूर्व कबीरका आविर्भाव हुआ था, और उनके पंथके साधु देशमें घूम-घूमकर 'निर्गुन'का प्रचार कर रहे थे तथा

जाति-पांत एवं कर्मकाडका खण्डन कर रहे थे। उनके साथ ही गोरखपन्थी साधु हठयोग द्वारा 'ब्रह्मानुभूति'का उपदेश दे रहे थे। वे इला, पिंगला और सुषुम्नाको साधकर 'त्रिकुटी महल' मे 'प्रीतमकी सेज' बिछानेकी बातें किया करते थे। सूफी फकीर अवधी भाषामे प्रचलित प्रेम-गाथायें लिख-लिखकर 'प्रेमकी पीर' अथवा 'इश्कहकीकी' का प्रचार कर रहे थे। पर सर्वसाधारणमे इन सबसे अधिक प्रभाव रामानन्दी साधुओंका था, जो 'सीता-राम' की उपासनाका उपदेश देते थे। 'राम' शब्द उस समय तक ब्रह्मका पर्यायवाची मान लिया गया था और रामके अवतारमें विश्वास न करनेवाले लोग भी परम ब्रह्मका संकेत राम से करने लगे थे।

वृन्दावन उस समय कृष्ण भक्तिका केन्द्र बना हुआ था। एक ओर तो महाप्रभु चैतन्यके शिष्य, जिनमे जीव गोसाई मुख्य थे, श्रीकृष्णकी रागानुगा भक्तिका आदर्श रख रहे थे, दूसरी ओर वल्लभाचार्य श्रीकृष्णके अनुग्रहसे उनकी भक्ति प्राप्त होनेके सिद्धान्त का अपने पुष्टिमार्गका प्रतिपादन कर रहे थे। हरि-कीर्तनको लोकप्रिय बनानेका मुख्य श्रेय श्री चैतन्यके अनुयायियोंको ही था।

मीराबाईसे कुछ ही पहले मिथिलामे कविवर विद्यापति जयदेव के 'गीत गोविन्द'की कोमलकांत पदावलीको देशी भाषामे उतार चुके थे। यद्यपि मीराकी भांति उन्होंने सर्वथा कृष्ण-भक्तिसे प्रेरित होकर अपनी पदावली नहीं रची थी, उन्होंने मुख्यतया

साहित्यिक परिपाटीका पालन करते हुए अपनी काव्य शक्ति प्रदर्शित करनेके लिये राधाकृष्णके प्रेमपर लेखिनी चलाई थी, फिर भी उनके पद चैतन्यदेवके अनुयायियोमे बड़े भावसे गाये जाते थे।

इन सभी धाराओकी लहर साधु सतोके साथ मेड़ता और मेवाड भी पहुचती रहती थीं। मीराबाईके दादा राव दूदाजी स्वय कृष्ण भक्त थे और सत्सगके प्रमी थे, अत मीराबाईको बाल्यकालमे ही अपने समयकी विविध विचार-धाराओका परिचय हो गया था। यद्यपि मीराबाईने अपनेको किसी सम्प्रदाय-विशेषके साथ नहीं बांधा, फिर भी उनके पदोको देखने से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होने अपनी सारग्रहिणी प्रवृत्तिके अनु-सार सभी विचार-धाराओ से कुछ-न कुछ ग्रहण कर लिया था।

मीरांबाईके इष्टदेव

मीराबाईने श्री गिरिधरलालको अपना इष्टदेव माना था और उनके लिये 'राम-रमैया, 'साहब' 'बाला आदि सम्बोधनोका प्रयोग वह पर्यायवाची शब्दके रूपमे किया करती थीं। उनके 'इष्टदेव' निर्गुणी सतोके 'परब्रहन से कोई भिन्न वस्तु न थे। उन्होंने अपने 'गिरधर को अविनासी' संज्ञा दी है और कहा है—

चदा जायगा सुरज जायगा, जायगा धरण अकासी,
पवन पाणी दोनो ही जायंगे, अटल रहे अविनासी।१

एक दूसरे पदमें उन्होंने अपने 'साहब को 'आदि अनादी' बताया है —

१, पद ८२।

साहन पाया आदि अनादी, नातर भवमे जाती ।१

[अपने इष्टदेवका निवास वह अपने हृदयमे ही मानती थीं]—

मेरे पिय मो माहिं बसत है, कहूं न आती जाती ।२

[उसकी प्राप्तिके लिये 'ज्ञानकी गुटकी' की आवश्यकता पडती है, जो सतगुरुकी कृपासे मिलती है]—

गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्ही ज्ञानकी गुटकी ।३

['ज्ञानकी गुटकी' मिल जानेपर 'जनम जनमका सोया मनुवा' जाग जाता है]

जनम-जनमका सोया मनुवा, सतगुर शब्द सुण जागा ।४

सम्भवत मीराबाईने अपनी साधनाके प्रारम्भमे निर्गुणी सतोके प्रभावमे हठयोगसे ब्रह्मानुभूतिका प्रयास किया था। इसीलिये उन्होने अपने कुछ पदोमे 'त्रिकुटी महल' (ब्रह्म रध्र) मे बने हुए झरोखेसे झाकी लगाकर देखने तथा 'सुन्न महल' मे 'सुरत जमाने' और 'सुखकी सेज' बिछानेकी चर्चा की है—

त्रिकुटी महलमे बना है झरोखा, तहासे झाकी लगाऊ री।

सुन्न महलमे सुरत जमाऊ, सुखकी सेज बिछाऊ री ।५

कबीर आदि सतोकी भाति उन्होने भी 'अगमके देस' चलनेकी इच्छा प्रकट की है जहा शुद्ध आत्मा प्रेमके सरोवरमे केलि किया करता है—

चलो अगमके देस काल देखत डरे।
वह भरा प्रेमका हौज हस केला करे।६

---

१ पद १३१। २ पद ४२। ३ पद १६०। ४ पद ४५।
५ पद १३७। ६ पद १२८।

माधुर्य भावसे उपासना

पर साधनाका यह मार्ग सम्भवत. उनकी प्रवृत्तिके अनुकूल नहीं था, इसलिये वह उनसे निभ नहीं सका। उन्हे 'माधुर्य भाव' से अपने इष्टदेवकी उपासना अधिक रुचिकर हुई।

भक्त लोग पत्नीके रूपमें परमेश्वरकी उपासना भक्तिका चरम विकास मानते हैं। इसका सर्वोत्कृष्ट दृष्टान्त कृष्णके प्रति गोपिकाओका अनन्य प्रेम बताया जाता है। देवर्षि नारदने भी भक्तिकी व्याख्या करते हुए कहा है

'भक्ति परम प्रेमरूपा, यथा व्रजगोपिकानाम्।'

विघ्न-बाधाओंको पार करके अपने प्रियतमसे मिलनेकी जो आतुरता परकीयामें दिखाई पडती है, वह स्वकीयामे नहीं प्रकट होती। सम्भवतः इसीलिये आचार्योंने परकीयाका प्रेम ('यथा व्रजगोपिकानाम्') भक्तिकी पराकाष्ठा मानी है।

इस 'भाव'को प्राप्त कर लेनेपर भक्त हर समय अपने आराध्यके ध्यानमे मग्न रहने लगता है। उसका शरीर लौकिक कार्योंमे भी फसा रहनेपर उसका मन प्रभुका स्मरण किया करता है। मीराने भी कहा है—

मैं तो म्हारा रमैयाने देखबो करूं री।
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूं री।
जहा जहा पाव धरूं धरणीपर तहा तहा निरत करूं री।[1]
'जहा जहा पाव धरू धरणी पर, तहा तहा निरत करूं री मे

---

1. पद ५३।

मीरांकी चरम तल्लीनता प्रकट होती है। इससे विदित होता है कि वह साधनाकी उस चरम सीढ़ीपर पहुंच गई थीं, जब 'प्रभु-मय सब जग जानी' केवल कल्पनाकी वस्तु नहीं रह गई थी, वह उनके लिये एक अनुभूत सत्य था।

साधनाकी इस ऊंची सीढ़ीपर पहुंचकर स्वभावतया उन्हें लोकलज्जा अथवा लोकनिंदाका कोई ध्यान नहीं रह गया था। जब उन्होंने संसारसे वैराग्य धारण कर लिया, भक्तिके लिये अपने भाई-बन्धु छोड़ दिये, साधुओंका सत्संग लिया, तब लोकलज्जासे उनका क्या नाता।

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई।
भाई छोड्या, बन्धु छोड्या, छोड्या सगा सोई।
साध संग बैठ-बैठ लोकलाज खोई।[१]

इसी पदमें वह आगे कहती है—

अब तो बात फैल पड़ी जाणे सब कोई।
मीरा राम लगण लगी होणी होय सो होई।[२]

'होणी होय सो होई' में लोकके प्रति मीरांका नितान्त उपेक्षा-भाव स्पष्ट रूपसे दृष्टिगोचर होता है। इसीलिये 'लोगोंके बिगड़ी' कहनेपर भी उन्होंने कोई शिकायत नहीं की।

नैणा मोरे बाण पड़ी, साईं मोहिं दरस दिखाई।
चित चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी।
कैसे प्राण पिया बिनु राखूं, जीवण मूर जड़ी।

---

१. पद ४। २. पद वही।

कबकी ठाढी पथ निहारूं, अपण भवन खडी।
मीरा प्रभुके हाथ बिकानी, लोक कहे बिगडी।'१

उनका हृदय प्रतिपल अपने प्रभुके बिछोहमें तड़पता रहता था। उन्होंने अपनी इस आध्यात्मिक तड़पनका, 'प्रेमकी पीर' का बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन किया है—

सखी मेरी नींद नसानी हो।
पियाको पंथ निहारते, सब रैन बिहानी हो।
सखियन मिलके सीख दई, मन एक न मानी हो।
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो।
अंग छीन व्याकुल भई, मुख पिय-पिय बानी हो।
अंतर बेदन बिरहकी, वह पीर न जानी हो।
ज्यों चातक घनको रटे, मछरी जिमि पानी हो।
मीरा व्याकुल बिरहनी, सुध-बुध बिसरानी हो।२

'अतर बेदन बिरहकी, वह पीर न जानी हो' इस भावको उन्होंने एक दूसरे पदमें और स्पष्ट करके कहा है—

घायलकी गति घायल जाने, की जिन लाई होय।
जौहरीकी गत जौहरी जाने, की जिन जौहर होय।३

इस 'प्रेमकी पीर'को दुनियाके लोग नहीं समझते। इसे तो ऊंची साधनामें रत आत्मायें ही अनुभव करती हैं। अपने 'प्रियतम' के बिना मीरा व्याकुल थीं—

१. पद ८९। २. पद ७६। ३. पद ३४।

साधन सुध ज्यूं जाने त्यूं लीजे हो।
तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरी कीजे हो।
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा यूं तन पल-पल छीजे हो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुरन नहिं कीजे हो।१

कबीरने भी अपनी 'व्याकुलता' शुद्ध इन्हीं शब्दोंमें व्यक्त की है—

तलफै बिन बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया तड़फ-तड़फ के भोर किया।
तन मन मोर रहट अस डोलै सूनि सेज पर जनम छिया।
नैन थकित भये पंथ न सूझै साईं बेदरदी सुध न लिया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरो पीर दुख जोर किया।

मीराको 'बिस्वा बीस' विश्वास था कि गिरिधरने स्वप्नमें उनका पाणिग्रहण किया—

माई म्हाने सुपनेमें वरण गया जगदीस।
सोतीको सुपना आविया जो, सुपना बिस्वा बीस।२

गिरिधर उनके 'भव-भव के भरतार' थे—

कैसे तोड़ूं राम सूं, म्हांरो भो भो रो भरतार।३

इसीलिये उन्होंने अपनी प्रीत 'पुरवली' बताई है—

राणाजी म्हारी प्रीत पुरवली मैं क्यां करूं।४

---

१ पद ८४, २ पद १४७ ३ पद १५३ ४, पद १७१,

इसी 'प्रीत पुरवली' के बलपर वह कभी-कभी अपने 'प्रियतम' को उपालम्भ भी दे बैठती थीं—

स्याम मोसू ऐंडो डोले हो।
औरन सूं खेले धमार, म्हा सू मुखहु न बोले हो।
म्हारी गलिया ना फिरे, वाके आगण डोले हो।
म्हारी अगुली ना छुवे, वाको बहिया मोरे हो।
म्हारे अंचरा ना छवे वाको घूंघट खोले हो।
मीराको प्रभु सावरो, रंग-रसिया डोले हो।१

भक्तोमे यह धारणा बँधी चली आ रही है कि मीराबाई ललिता नामकी गोपिकाकी अवतार थीं। मीराने भी अपने एक पदमे अपनेको 'गोकुल अहीरणी' कहा है—

ऐसी प्रीत करे सोई, दास मीरा वरे जोई।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी। २

इसमे सदेह नहीं है कि मीराबाईमे अपने गिरिधर लालके प्रति जो अनन्य प्रेम लक्षित होता था, वह किसी गोपबालासे कम न था। इसीलिये नाभादास आदि भक्तोने मीराबाईका परिचय देते हुए कहा है—

लोक लाज कुल शृंखला तजि मीरा गिरिधर भजी।
सन्श गोपिका प्रेम प्रगट कलयुगहिं दिखायो। ३

कबीर आदि जब अपनेको 'रामकी बहुरिया' कहते है, तो

---

१ पद १११, २ पद २५ ३ भक्तमाल सटीक, पृ० ६९४

उसमे एक कृत्रिमता मालूम पडती है, पर मीराबाईका यह कथन जरा भी नहीं खटकता—

मेरे गिरधर गुपाल दूसरो न कोई ।

जाके सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई । १

जब यह कहती है—

तुम्हरे कारण सब सुख छोड्यो, अब मोहिं क्यूं तरसावो । २

तो उसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं प्रकट होती, क्योंकि यह तो उनके जीवनपर घटित होनेवाला वर्णन है ।

रहस्यवाद

मीराबाईने अपने कुछ पदोंमे परमात्मासे अपने तादात्म्यकी अनुभूतिका अथवा परमात्मासे मिलनकी उत्कण्ठाका वर्णन किया है, जिनमे रहस्यवादकी झलक दिखाई पडती है । कहीं-कहीं तो उनका यह वर्णन कबीर आदि निर्गुणवादी सन्तोंकी भांति रूढि-गत हो गया है । जैसे—

बिन करताल पखावज बाजे, अनहदकी झनकार रे ।

बिन सुर राग छतीसूं गावै रोम-रोम रंग सार रे । ३

पर अधिकाशतया उनका वर्णन अनुभूति-मूलक है । सारी सृष्टि प्रभुसे मिलनेके लिये नया रूप धर लेती है । इस महामिलन की मंगल सूचना देनेके लिये दादुर, मोर और पपीहा अपनी पंचम तान छेड देते है, रिमझिम पानी बरसता है । ऐसे समयमे

---

१ पद ३५ २ पद ९४ ३ पद ११२

भेजने आदिका और अपनी विरहजन्य आकुलताका (उनका विरह लौकिक नहीं, वरन परमात्मासे आत्माके विछडनसे उत्पन्न पारलौकिक था) वर्णन किया, जिससे उनके पदोंपर उनके व्यक्तित्वकी एक विशेष छाप लग गई है।

आलम्बनका स्वरूप

उनके सभी पदोंके आलम्बन गिरिधर लाल है, जिन्हें उन्होंने राम, रमैया, हरि, गोविन्द, नन्दनन्दन, कान्हा, सइया आदि नामोंसे भी सम्बोधित किया है। उनके श्रीकृष्ण सूरदासके बालकृष्ण नहीं, वरन प्रौढ कृष्ण हैं। सूरदासकी भक्ति 'सख्य भाव' की थी, अत उनका ध्यान श्रीकृष्णकी बाल-लीलाओं की ओर जाना स्वाभाविक था, पर मीराबाईकी भक्ति 'माधुर्य भाव की थी, अत उनके आलम्बन प्रौढ श्रीकृष्ण ही हो सकते थे। सूरदास 'घुटुरन चलत रेनु तन-मण्डित मुख दधिलेप किये' द्वारा श्रीकृष्णके बाल-चापल्यका चित्र हमारी आखोंके सामने प्रस्तुत करते हैं, पर मीरांके श्रीकृष्ण 'मोर-मुकुट पीतम्बरो गल वैजन्ती माल' पहने 'कालिन्दीके तीर' गौयें चराते हैं और गोपियोंके साथ क्रीडा करते हैं। १

मीराका श्रीकृष्णको जगाना भी देखिये—यह जगाना यशोदा का कृष्णको जगानेके समान नहीं है, बल्कि एक ललनाका अपने पतिको जगानेके समान है।

१, पद ३३

जागो बंसीवारे ललना, जागो मेरे प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत सुनियत हैं, कंगना के झनकारे। १

रजनी बीत चली, प्रभात हो गया, घर-घरके दरवाजे खुल गये। गोपियोंके दही मथनेकी आवाज आ रही है, उनके कंगनों की झनकार सुनाई पड रही है। मीराके श्रीकृष्ण उनकी सेजपर पड़े सो रहे हैं। मीरा अपने प्राणवल्लभको इसलिये जगा रही हैं कि कहीं सखिया यह देखकर उन्हें चिढ़ावें न।

मीराने अपने आलम्बनका स्वरूप निम्नप्रकार अंकित किया है—
बसो मेरे नैननमे नन्दलाल।
मोहनी मूरति संवरि सूरति, बने नैन विसाल।
अधर सुधा रस मुरली राजित, उर वैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित, नूपुर सब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई, भक्त-वछल गोपाल। २

अनुभावोंका चित्रण

अपने आलम्बन श्रीगिरिधर लालके प्रति मीरांबाईके हृदयमे जो रति थी, वही उनके पदोंमे त्रिविध विभावानुभावादिसे पुष्ट होकर व्यक्त हुई है। मीरांबाईके पदोंमे व्यभिचारी भावोंका चित्रण बहुत कम है, अनुभावोंका ही चित्रण अधिक है। इन पदोंमे हमें उनके मानसकी स्पष्ट झांकी मिलती है।

१, पद ३७, २, पद १८,

वे उठते-बैठते रामका नाम लेती हैं—

मीरा बैठी महलमे रे, ऊठत बैठत राम । १

सीप भर पानी और टाँक भर अन्न खाकर अपना दिन बिताती हैं—

सीप भर्‌यो पाणी पिवे रे, टाँक भर्‌यो अन्न खाय । २

अपने 'पिया'के लिये जोगिन बनने तथा काशी जाकर करवत लेनेका निश्चय करती हैं—

तेरे खातर जोगण हूंगी, करवत लूंगी कासी । ३

कभी उनके मनमे चंदनकी चितापर जल-बलकर भस्म हो जानेकी इच्छा होती है—

अगर चदणकी चिता बणाऊं, अपणे हाथ जला जा ।
जल-बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा ॥४

वे अपने 'पिया' से सदा अपने नयनोंके आगे रहनेकी प्रार्थना करती हैं—

पिया जी म्हारे नैणा आगे रहज्यो जी ।
नैणा आगे रहज्यो, म्हाने भूल मत जाज्यो जी ।५

इन सभी चित्रोंमे उनके प्रेमानुरक्त हृदयकी स्पष्ट झाकी मिलती है ।

१, पद १५३, २ वही ३ पद ८३, ४, पद १३९ ५, पद १६,

विरह-वर्णन

काव्यकी दृष्टिसे मीराका विरह-वर्णन सर्वोत्कृष्ट है। उन्होने अपने 'प्रियतम' के वियोगमे अपने हृदयकी जिस आकुलताका चित्रण किया था, वह उधार ली हुई नहीं थी, इसीलिये उनमे इतनी स्वाभाविकता आ गई है।

पपीहाको सम्बोधनकर वे कहती हैं—

पपइया रे पिवकी वाणि न बोल।
सुणि पावेली विरहणी, थाडो राखेली आख मरोड।
चाच कटाऊं पपइया रे ऊपरि कालर लूण।
पिव मेरा मैं पीवकी रे, तू पिव कहै सकूण।
थारा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेला आज।
चांच मढाऊं थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज।
प्रीतम कू पतिया लिखू, कउवा तू ले जाइ।
जाइ प्रीतम जी सूं यूं कहै रे, थारी विरहीण अन्न न खाइ।
मीरा दासी व्याकुली रे, पिव-पिव करत बिहाई।
वेगि मिलो प्रभु अन्तरजामी, तुम विन रह्योही न जाइ।१

अपने प्रितमके वियोगमे वे रात-भर सूनी सेजपर अपलक बैठी आसुओंकी माला पिरोया करती हैं—

मैं विरहिन बैठी जागू, जगत सब सोवै री आली।
विरहिन बैठी रगमहलमें, मोतियनकी लड पोवै।

१, पद ८०,

इक विरहिन हम ऐसी देखी, अंसुअनकी माला पोवै।
तारा गिण-गिण रैन विहानी, सुखकी घडी कब आवै।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर मिलके विछुड न जावै।१

होली आदिक मगल त्योहारोंपर जब सब ओर आनन्द तथा उत्साहकी लहर दौड जाती है, उन्हें अपने 'पिया' के विना 'अटारी' सूनी लगती है और होली फीकी लगती है—

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी मेरी प्यारी।
सूनो गाव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी विरहन पिव बिन डोलै, तज दइ पीव पियारी।
भई हूं या दुखकारी।
देस बिदेस संदेस न पहुचै, होय अंदेसा भारी।
गिणता-गिणता घस गईं रेखा, आगरियाकी सारी।
अजहु नहिं आये मुरारी।
बाजत झाझ-मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आई बसन्त कंथ घर नाहीं, तनमें जर भया भारी।
स्याम मन कहा बिचारी।२

प्रियतमकेअभावमें बादलोंको बरसते देख उनके नयनोंसे भी झडी लग जाती है—

बादल देख झरी हो, स्याम मैं बादल देख झरी।
काली-पीली घटा उमँगी, बरस्यो एक घरी।

१, पद ८२, २, पद ११४,

जित जाऊं तित पानिहि पानी, हुई सब भोम हरी।
जाका पिव परदेस वसत है भीजै बार खरी।[१]

कहीं-कहीं उन्होंने अपनी विरहजन्य व्याकुलता प्रदर्शित करनेके लिये अंगुलीकी मुंदरी ढीली पड़कर बांहमें आ जाने (आंगुलियाकी मूदड़ी म्हारे आवण लागी बाहि) तथा पान जैसी पीली पड़ जाने (पाना ज्यूं पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग)[२] आदिका परम्परागत वर्णन किया है; पर इन वर्णनोंमें भी उनकी सहानुभूतिका पुट है, जिससे वे अस्वाभाविक नहीं होने पाये हैं।

संयोग-वर्णन

मीराने संयोग-वर्णन बहुत थोड़ा किया है, सन्तोंके प्रभावमें उन्होंने कहीं-कहीं ब्रह्मानुभूतिके वर्णन किये हैं, जिनमें रहस्य-वादकी झलक आ गई है। ये वर्णन पूर्णतया परम्परागत हैं, और उनमें स्वानुभूतिकी बहुत थोड़ी मात्रा दिखाई पड़ती है।

अलंकार-विधान

मीराके वर्णनोंमें यत्र-तत्र अलंकार भी स्वाभाविक रीतिसे आ गये हैं। उनको रखनेके लिये उन्होंने कभी कोई प्रयास नहीं किया। कहीं-कहीं उनके पदोंमें नन्ददासकी भांति अनुप्रासों की छटा आ गई है—

कुंडलकी अलक झलक कपोलन पर छाई।

१, पद ११९, २, पद ७३,

मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई।[१]

उपमायें (जैसे, पाना ज्यूं पीली पडी रे)[२] तथा उत्प्रेक्षायें (जैसे, मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई)[३] तो वर्णन-शैलीके स्वाभाविक अंग है उनके लिये प्रयासकी आवश्यकता नहीं पडती।

मीराने कहीं-कहीं सुन्दर रूपक बांधे है, जैसे—

या तनको दियना करों मनसा करो बाती हो।
तेल भराबो प्रेमका बारो दिन राती हो।[४]

इसके अलावा ढूंढनेपर उनके पदोंमें श्लेप, विभावना, दृष्टान्त आदि अनेक अनुप्रासोंके उदाहरण मिल जायेंगे। स्वभावोक्ति तो उनके पदोंमें भरी पडी है।

छंद

मीरांकी कविता सम्भवतः पिंगलादि नियमोको ध्यानमे रख-कर नहीं लिखी गई थी, इसीलिये उसमे बहुधा मात्रामे घटती-बढती अथवा यतिभंग-दोप दिखाई पडता है। नियमोंकी पूर्ण उपेक्षाके कारण कहीं-कहीं तो यह कहना कठिन हो जाता है कि उनकी अमुक पंक्ति किस छंदके अनुसार है। गीति-काव्य होनेके कारण उनकी कवितामें छंदोंकी वह विविधता नहीं है, जो तुलसी, केशव आदि उनके परवर्ती कवियोमे दिखाई पडती है। हा, उनके पदोंमें राग-रागनियोकी विविधता खूब है। मीराका मलार

१, पद ३२, २ पद ७३ ३, पद ३२, ४, पद ७४

राग विशेष रूपसे प्रसिद्ध है। कल्याण, मारू आदि रागोंमें भी उनके बड़े सुन्दर-सुन्दर भजन हैं।

मीरांकी भाषा

मीरांका सम्बन्ध चार प्रदेशोंसे रहा था—मेड़ता, मेवाड़, ब्रज तथा गुजरात। अतः इन चारों ही प्रदेशोंकी भाषाओंके शब्द उनके पदोंमें पाये जाते हैं। इसके अलावा उनमें कुछ फारसी शब्द भी पाये जाते हैं—जैसे दीदार, नजर, तकसीर, हाजिर, नाजिर, मरजी आदि।

उनका सबसे अधिक सम्बन्ध मेड़ता तथा मेवाड़से रहा, इसीलिये उनके पदोंपर स्वभावतया इन प्रदेशोंकी भाषाकी गहरी छाप दिखाई पड़ती है। उनके पदोंको समझनेके लिये राजस्थानीके व्याकरणकी कुछ विशेषताओंको समझ लेना आवश्यक है।[1]

संज्ञा

हिन्दीके प्रायः सभी पुलिंग आकारान्त शब्द राजस्थानीमें ओकारान्त हो जाते हैं, और उनका बहुवचन हिन्दीकी भांति एकारान्त न होकर आकारान्त होता है, जैसे म्हांरोसे म्हारा, रूठ्योसे रूठ्या आदि।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंका बहुवचन आं तथा आवां प्रत्यय लगाकर बनाया जाता है, जैसे मालासे माला अथवा मालावां।

---

१. मीराबाईकी पदावलीके आधारपर।

इकारन्त तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके बहुवचन या अथवा इया प्रत्यय लगाकर बनाये जाते हैं, जैसे सहेलीसे सहेल्या अथवा सहेलिया।

उकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोके बहुवचन वा तथा उवा प्रत्यय लगाकर बनते हैं।

अन्य शब्दोंके बहुवचन प्राय. एकवचनके समान होते हैं। अकारान्त शब्दोका बहुवचन आ प्रत्यय लगाकर बनाते हैं, जेसे नैणसे नैणा।

राजस्थानीमे संज्ञाके विकारी रूपोंके साथ निम्न विभक्ति-चिह्न लगाये जाते हैं :—

करण तथा अपादान कारक—सू, सैं, सौं, तैं—जैसे म्हासू म्हासैं, म्हासौं आदि।

कर्म तथा सम्प्रदान कारक—नू, नु, ने, कू, कौ—जैसे रमैयानू रमैयाने, रमैयाकू आदि।

अधिकरण कारक—मैं, नें, ना, माहि आदि।

सम्बोधन कारक—रो, री, नो, नी—जैसे संतोरी, संतोनी आदि।

सर्वनाम

उत्तम पुरुष 'हूं':—

कर्त्ता कारक—म्हैं, म्हा।

करण तथा अपादान—मोसू, म्हांसू।

कर्म तथा सम्प्रदान—मने, म्हांने, मोकूं।
अधिकरण—मोपरि।
सम्बन्ध— मो, म्हांरो, म्हांरा।
मध्यम पुरुष 'तू':—
कर्त्ता कारक—थे।
करण तथा अपादान—तोसूं, तोसें।
कर्म तथा सम्प्रदान—थांने, तोइ।
सम्बन्ध—थारो, थांरो, थांको।

क्रिया

१. वर्त्तमान व विधि—

	उत्तम पुरुष,	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
एकवचन—	जाऊं, जोऊं	जाज्यो, रासज्यो	सतावै
बहुवचन—	जांता, करां,	न्हालो, आवो,	बसत है, जाणत है

२. भविष्यत्—

	उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
एकवचन—	देस्यूं,	जासी	पावेती
बहुवचन—	धमकास्यां	करोता	देहैं

३. हेतुहेतुमद्भूत—
एकवचन—जाणती, फेरती।

४. सामान्यभूत (अकर्मक क्रिया)—

एकवचन—	डरी, चली	परी, नासी
बहुवचन—	...	मिल्या, आया, बोल्या

५. सामान्यभूत (सकर्मक क्रिया)—

एकवचन—	जाणी, लिये	मोकल्यो
बहुवचन—	...	गमाया, करिया

उपसंहार

हिन्दी-साहित्यमे मीरांबाईका नाम सदा आदरसे लिया जायगा। वह हिन्दी-गीत-काव्यकी जन्मदात्री थीं। उन्होंने अपने गिरधरके अनन्य प्रेमकी जो धारा बहाई, वह आज उत्तर-भारतके घर-घरमे व्याप्त है। सर्वसाधारणमे उनका नाम तुलसी और सूरके बाद ही लिया जाता है। उनकी प्रेम वाणीकी तुलना ग्रीक कवियत्री सैफो अथवा ईसाई भक्तिन टेरेसा अथवा सूफी साधिका रबियासे की जाती है। उनकी वाणीमे अलौकिक बल तथा पुरुषार्थका सन्देश है। उनका सारा जीवन अनेक विघ्न-बाधाओका चट्टानकी तरह निर्भय होकर सामना करते हुए अपने पथपर अचल-अटल रहनेका एक परमोत्कृष्ट उदाहरण है। राणाने उन्हें विषका प्याला भेजा, सांपका पिटारा भेजा, सूलकी सेज भेजी, पर वह अपने मार्गसे विचलित न हुई। उन्होने अपने मनमे यह बांध रखा था 'होणी होय सो होई', फिर भला उन्हें कौन अपने निश्चयसे टिगा सकता था। गर्दन हथेलीपर धर कर घूमनेवालोकी गर्दन कोई नहीं उतार सकता। भय ही मृत्यु है, पर जब मनुष्य निर्भय होकर किसी बातपर कमर कस लेता है, तो वह मृत्युञ्जयी बनता है। मीराके जीवनका यही अजर-अमर सन्देश है।

मीरांबाईकी पदावली

खण्ड १

विनय और प्रार्थना

(१)

राग तिलंग

मन रे परसि हरि के चरण ॥ टेक ॥
सुभग सीतल कंवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ॥
जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपणी सरण।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो नखसिख सिरी धरण ॥
जिण चरण प्रभु परसि लीणो, तरी गोतम घरण।
जिण चरण काली नाग नाथ्यो, गोपि लीला करण ॥
जिण चरण गोवरधन धार्यौ, इन्द्र को गर्व हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥

(२)

राग छायानट

भज मन चरन कवल अविनासी ॥ टेक ॥
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी ।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ॥
इस देही का गरब न करना, माटी मे मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड़्याँ उठि जासी ॥
कहा भयो है भगवा पहर्यों, घर तज भये सन्यासी ।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलटि जनम फिर आसी ॥
अरज करों अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी ॥

(३)

भज ले रे मन गोपाल गुणा ॥ टेक ॥
अधम तरे अधिकार भजन सू , जोइ आये हरि की सरणा ।
अविस्वास तो साखि बताऊँ, अजामेल गणिका सदना ॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना ।
जाको रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिरो एक छिना ॥
बालापन सब खेल गँवाया, तरुन भयो जब रूप घना ।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना ॥
गज अरु गीदहु तरे भजन सूँ, कोउ तर्यौ नहिं भजन बिना ।
धना भगत पीपा पुनि सेंवरी, मीरा की हूँ करो गनना ॥

(४)

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥ टेक ॥
भाई छोड़्या बंधु छोड़्या छोड़्या सगा सोई।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
प्रेम नीर सींच सींच बिप बेल बोई ॥
दधि मथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई।
राणा विप को प्याल्यो भेज्यो पाय मगन होई ॥
अब तो बात फैल पड़ी जाणे सब कोई।
मीरा राम लगण लगी होणी होय सो होई ॥

(५)

राग झिंझ टी

मेरे गिरधर गुपाल दूसरो न कोई ॥ टेक ॥
जाके सिर मोर मुकट मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु अपना नहिं कोई ॥
छांड़ दई कुल की कान क्या करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि बैठि लोक लाज खोई ॥
चुनरी के किये टूक टूक ओढ़ लीन्ह लोई।
मोती मूंगे उतार बन माला पोई ॥

अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई आनँद फल होई॥
दूध की मथनिया बडे प्रेम से विलोई।
माखन जब काढि लियो छाछ पिये कोई॥
आई म भक्ति काज जगत देख मोही।
दासी मीरा गिरधर प्रभु तारो अब मोही॥

(६)

राग प्रभाती

म्हांरो जनम मरन को साथी, थांने नहिं विसरूँ दिन राती॥टेक॥
तुम देख्यां विन कल न पडत है, जानत मेरी छाती।
ऊंची चढ चढ पथ निहारूँ, रोय रोय अँखियां राती॥
यो ससार सकल जग झूँठो, झूँठा कुलरा नाती।
दोउ कर जोड्यां अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती॥
यो मन मेरो वडो हरामी, ज्यूँ मदमातो हाथी।
सतगुरु दस्त धर्‍यो सिर ऊपर, आंकुस दे समझाती॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणां चित राती।
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती॥

(७)

मेरे मन राम नामा बसी।
तेरे कारण स्याम सुदर सकल लोगां हसी॥
कोई कहे मीरा भई बौरी कोई कहे कुल नसी।
कोई कहे मीरा दीप आगरी नाम पिया सूँ रसी॥

खाँड़ धार भक्ती की न्यारी काटि है जम फँसी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सब्द सरोवर धसी ॥

(८)

राग कल्याण

मेरो मन राम हि राम रटै रे ॥ टेक ॥
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटे रे॥
कनक कटोरे इमृत भरियो, पीवत कौन नटे रे।
मीरा कहे प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटे रे॥

(९)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ॥ टेक ॥
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग मे सभी खोवायो ॥
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन दिन वढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो ॥

(१०)

राग रामश्री

राम नाम रस पीजे मनुआँ, राम नाम रस पीजे ॥ टेक ॥
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित से बहाय दीजे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रँग में भींजे ॥

(११)

हरि सो विनती करौ कर जोरी ॥ टेक ॥

परवस रचत धमारी, हम घर मातु पिता पारे गारी ॥

निपट अलप बुधि दीन गति थोरी, प्रेम नगरन रस ले वरजोरी ॥

मीरा के प्रभु सरण तिहारी, अवचक आय मिलहु गिरधारी ॥

(१२)

राग दरबारी

तुम सुनो दयाल म्हांरी अरजी ॥ टेक ॥

भौसागर मे बही जात हूँ, काढो तो थांरी मरजी ॥

यो ससार सगो नहि कोई, साचा सगा रघुवरजी ॥

मात पिता और कुटँब कबीलो, सब मतलब के गरजी ॥

मीरा को प्रभु अरजी सुन लो, चरन लगाओ थांरी मरजी ॥

(१३)

राग रामकली

अब तो निभायां बनेगा, बाँह गहे की लाज ॥ टेक ॥

समरथ सरण तुम्हारी साँइयां, सरब सुधारण काज ॥

भवसागर ससार अपरबल, जा मे तुम हो जहाज ॥

निरधारां आधार जगत गुरु, तुम बिन होय अकाज ॥

जुग जुग भीर करी भक्तन की, दीन्ही मोच्छ समाज ॥

मीरा सरण गही चरणन की, पेज रखो महराज ॥

(१४)

होजी म्हाराज छोड मत जाज्यो ॥ टेक ॥
मैं अबला बल नाहिं गुसाईं, तुमहिं मेरे सिरताज ॥
मैं गुणहीन गुण नाहिं गुसाईं तुम समरथ महराज ॥
रावली होइ ये किन रे जाऊँ, तुम हो हिवडा रो साज ॥
मीरा के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज ॥

(१५)

म्हारी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी ॥ टेक ॥
पल पल भीतर पंथ निहारूँ,
दरसण म्हांने दीजो जी ॥
मैं तो हूँ बहु औगणहारी,
औगण चित मत दीजो जी ॥
मैं तो दासी थाँरे चरण जनाँ की
मिल बिछुरन मत कीजो जी ॥
मीरा तो सतगुरु जी सरणे,
हरि चरणाँ चित दीजो जी ॥

(१६)

राग बिलावल

पिया म्हाँरे नेणा आगे रहज्यो जी ॥ टेक ॥
नैणा आगे रहज्यो, म्हांने भूल मत जाज्यो जी ॥
भौसागर में बही जात हूँ, वेग म्हारी सुध लीज्यो जी ॥

राणाजी भेजा विषका प्याला, सो अमृत कर दीज्यो जी ॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो जी ॥

(१७)

म्हारे नैणा आगे रहीजो जी, स्याम गोविन्द ॥ टेक ॥
दास कबीर घर बालद जो लाया, नामदेवका छान छवंद ॥
दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनंद ॥
भीलणी का बेर सुदामा का तुन्दुल, भर मूठड़ी बुकंद ॥
करमा बाई को खींच अरोग्यो, होइ परसण पावंद ॥
सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्यो तारा बिच चंद ॥
सब संतों का काज सुधारा, मीरा सूँ दूर रहंद ॥

(१८)

राग देवगन्धार

बसो मेरे नैननमें नन्दलाल ॥ टेक ॥
मोहनी मूरति साँवरि सूरति, बने नैन बिसाल ॥
अधर सुधा रस मुरली राजित, उर बैजंती माल ॥
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित, नूपुर सब्द रसाल ॥
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त-बछल गोपाल ॥

(१९)

राग श्यामकल्याण

हरि तुम हरो जन की भीर ॥ टेक ॥
द्रोपदी की लाज राख्यो तुम बढ़ायो चीर ॥
भक्त कारन रूप नरहरि धर्‍यो आप सरीर ॥

हरिनकस्यप मार लीन्हो धस्यो नाहिन धीर ॥
बूडते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर ॥
दास मीरा लाल गिरधर दुख जहाँ तहँ पीर ॥

(२०)

मीरा को प्रभु साची दासी बनाओ।
झूठे धंधों से मेरा फंदा छुड़ाओ ॥ टेक ॥
लूटे ही लेत विवेक का डेरा।
बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा ॥
हाय राम नहिं कछु बस मेरा।
मरत हूँ बिवस प्रभु धाओ सवेरा ॥
धर्म उपदेस नित प्रति सुनती हूँ।
मन कुचाल से भी डरती हूँ ॥
सदा साधु सेवा करती हूँ।
सुमिरण ध्यान में चित धरती हूँ ॥
भक्ति मार्ग दासी को दिखाओ।
मीरा को प्रभु साँची दासी बनाओ ॥

(२१)

अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान ॥ टेक ॥
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढी विमान ॥
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान।

कुब्जा नीच भीलनी तारी, जानै सकल जहान ॥
कहँ लगि कहूं गिनत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान।
मीरा कहै मैं सरण रावली, सुनियो दोनों कान ॥

(२२)

सुन लीजे विनती मोरी, मैं सरन गही प्रभु तोरी ॥ टेक ॥
तुम तो पतित अनेक उधारे, भवसागर से तार्‌यो ॥
मैं सब का तो नाम न जानों, कोई कोई भक्त बखानों ॥
अम्बरीक सुदामा नामी, पहुंचाये निज धामा ॥
ध्रुव जो पाँच बरस को बालक, दरस दियो घनस्यामा ॥
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा बैल चराया ॥
सेबरी के जूठे फल खाये, काज किये मन भाये ॥
सदना औ सेना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई ॥
कर्मा की खिचड़ी तुम खाई, गनिका पार लगाई ॥
मीरा प्रभु तुम्हरे रँग राती, जानत सब दुनियाई ॥

(२३)

राग पहाड़ी

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभु जी अरज क[illegible] ॥ टेक॥
या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सो[illegible]
अष्ट करम की तलब लगी हैं, दूर करो[illegible]
यो संसार सब बह्यो जात है लख[illegible]
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवा[illegible]

(२४)

स्वामी सब संसार के हो, साँचे श्रीभगवान ॥ टेक ॥
स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती बीच समान।
सब मे महिमा तेरी देखी, कुदरत के कुरबान ॥
सूदामा के दारिद खोये, बारे की पहिचान।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी, दीन्हो द्रव्य महान ॥
भारत मे अर्जुन के आगे, आप भये रथवान।
उनने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ॥
ना कोइ मारे ना कोइ मरता, तेरा यह अज्ञान।
चेतन जीव तो अजर-अमर है, यह गीता को ज्ञान ॥
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बंदी अपनी जान।
मीरा गिरधर सरण तिहारी, लगै चरण मे ध्यान ॥

(२५)

अच्छे मीठे चाख चाख बोर लाई भीलणी ॥ टेक ॥
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ॥
झूठे फल लीन्हें राम, प्रेम की प्रतीत जाण।
ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी ॥
ऐसी कहा वेद पढी, छिन मे विमाण चढी।
हरिजी सूँ बाध्यो हेत, वैकुँठ मे झूलणी ॥
ऐसी प्रीत करे सोई, दास मीरा तरै जोइ।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ॥

(२६)

राग विहाग

करम गति टारे नाहिं टरे ॥ टेक ॥
सतबादी हरिचँद से राजा, सो तो नीच घर नीर भरे ॥
पाँच पाडु गुरू कुंती द्रोपती, हाड हिमालय गरे।
जज्ञ किया वलि लेण इन्द्रासन, सो पाताल धरे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, विष से अमृत करे ॥

(२७)

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार ॥ टेक ॥
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार ॥
कइ रे खाइयो कइ रे खरचियो, कइ रे कियो उपकार ॥
दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरो भवपार ॥

(२८)

यही विधि भक्ति कैसे होय।
मन की मैल हिय तें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ॥
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहिं चंडाल।
क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिलै गोपाल ॥
विलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत।
दीन हीन ह्वै छुधा रत से, राम नाम न लेत ॥
आपहि आप पुजाय के रे, फूले अंग न समात।

अभिमान टीला किये बहु, कहु जल कहाँ ठहरात ॥
जो तेरे हिये अंतर की जानै, ता सों कपट न बनै।
हिरदे हरि को नाम न आवै, मुख तें मनिया गनै ॥
हरी हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग।
दास मीरा लाल गिरधर, सहज कर वैराग ॥

(२९)

राग विलावल

लेतां लेतां राम नाम रे, लोकड़ियाँ तो लाजे मरे छे ॥ टेक ॥
हरि मंदिर जातां पावलिया रे दूखे, फिरि आवे सारो गाम रे ॥
झगड़ो थाय त्यां दौडी ने जाय रे, मुकिने घर ना काम रे ॥
भांड भवैया गनिका नृत्य करतां, वेसी रहे चारे जाम रे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित हाम रे ॥

(३०)

रावलो विड़द मोहिं रूड़ो लागे, पीड़ित परायें प्राण ॥
सगो सनेही मेरो और न कोई, वैरी सकल जहान ॥
ग्राह गह्यो गजराज उबार्‌यो, बूड न दियो छे जान ॥
मीरा दासी अरज करत हैं, नहिं जो सहारो आन ॥

(३१)

कमल-दल लोचना तैंने कैसे नाथ्यो भुजंग ॥ टेक ॥
पैसि पियाल काली नाग नाथ्यो, फण फण निर्त करंत ॥
कूद पर्‌यो न डर्‌यो जल माहीं, और काहू नहिं संक ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, श्री वृन्दावन चंद ॥

विरह और प्रेम

(३२)

जब से मोहिं नंदनँदन दृष्टि पड़्यो माई ॥
तब से परलोक लोक कछू ना सोहाई ॥
मोरन की चंद्र कला सीस मुकुट सोहै ।
केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥
कुंडल की अलक झलक कपोलन पर छाई ।
मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥
कुटिल भृकुटि तिलक भाल चितवन में टौना ।
खंजन अरु मधुप मीन भूले मृग छौना ॥
सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा ।
नटवर प्रभु भेष धरे रूप अति विसेषा ॥
अधर बिंब अरुन नैन मधुर मंद हांसी ।
दसन दमक दाड़िम दुति चमके चपला सी ॥
क्षुद्र घंट किंकिनी अनूप धुनि सोहाई ।
गिरधर अंग अंग मीरा बलि जाई ॥

(३३)

मेरो मन बसि गो गिरधर लाल सों ॥ टेक ॥
मोर मुकुट पीताम्बरो गल वैजन्ती माल ।
गउवन के संग डोलत हो जसुमति को लाल ॥

कालिंदी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय।
सीतल कदम की छाहियाँ हो मुरली बजाय॥
जसुमति के दुवरवाँ ग्वालिन सब जाय।
बरजहु आपन दुलरुवा हम सो अरुझाय॥
वृन्दावन कीडा करै गोपिन के साथ।
सुर नर मुनि सब मोहे हो ठाकुर जदुनाथ॥
इन्द्र कोप घन बरसो मूसल जल धार।
बूडत बृज को राखेऊ मोरे प्रान-अधार॥
मीरा के प्रभु गिरधर हो सुनिये चित लाय।
तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहिं कछु न सोहाय॥

(३४)

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाणे कोय॥टेक॥
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोणा होय।
गगन मडल पै सेज पिया की, किस बिध मिलणा होय॥
घायल की गत घायल जानै, की जिन लाई होय।
जौहरी की गत जौहरी जानै, कि जिन जौहर होय॥
दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद संवलिया होय॥

राग भैरवी

(३५)

मैं हरि बिन क्यों जिऊं री माय॥ टेक॥
पिय कारन बौरी भई जस काठहिं घुन खाय।

औषध मूल न संचरै, मोहिं लागो बौराय ॥
कमठ दादुर बसत जल महँ, जलहि तें उपजाय।
मीन जल के बीछुरे तन, तलफि के मरि जाय ॥
पिह ढूँढ़न वन वन गई, कहु मुरली धुनि पाय।
मीरा के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ॥

(३६)

म्हाँने चाकर राखो जी, गिरधारी लला चाकर राखो जी ॥ टेक॥
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलीन में, गोविंद लीला गासूँ ॥
चाकरी मे दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनो बातां सरसी ॥
मोर मुकट पिताम्बर सोहे, गल वैजंती माला।
बृन्दावन मे धेनु चरावें, मोहन मुरली वाला ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊ, बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्मी सारी ॥
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करने सन्यासी।
हरी भजन कूँ साधू आये, वृन्दावन के वासी ॥
मीरा के प्रभु गहिर गंभीरा, हृदे रहो जो धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हो, जमुनाजी के तीरा ॥

(३७)

राग प्रभाती

जागो बंसीवारे ललना, जागो मोरे प्यारे ॥ टेक ॥

(३७)

रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है, कगना के झनकारे।
उठो लाल जी भोर भयो है, सुर नर ठाढे द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे।
माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ कू तारे॥

(३८)

राग पीलू

करणाँ सुणि स्याम मेरी,
मैं तो होइ रही चेरी तेरी॥ टेक॥
दरसण कारण भई बावरी, विरह बिथा तन घेरी।
तेरे कारण जोगण हूँगी, दूँगी नग्र बिच फेरी॥
कुंज सब हेरी फेरी।
अंग भभूत गले म्रिग छाला, यो तन भसम करूँ री।
अजहुँ न मिल्या राम अबिनासी, बन बन बीच फिरूँ री॥
रोऊ नित टेरी टेरी।
जन मीरा कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटण सुख भेरी।
रूम रूम साता भइ उर में, मिटि गई फेरा फेरी।

(३९)

राग कन्हरा

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर ॥ टेक ॥
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिलके बड़े कठोर।
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर।
तुमसे हमकूँ कबर मिलोगे, हम सी लाख करोर।
ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूँ, अरज करत भयो भोर।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, दस्यूँ प्राण अकोर।

(४०)

तुम जीमो गिरधर लाल जी।
मीरा दासी अरज करे छे सुनिए परम दयाल जी ॥
छप्पन भोग छतीसो विंजन, पावो जन प्रतिपाल जी ॥
राज भोग आरोगो गिरधर, सनमुख राखो थाल जी ॥
मीरा दासी चरण उपासी, कीजे बेग निहाल जी ॥

(४१)

रघुनन्दन आगे नाचूँगी ॥ टेक ॥
नाच नाच रघनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ॥
प्रेम प्रीत का बांध घूँघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी ॥
पिया के पलँगा जा पौढूँगी, मीरा हरि रग राचूँगी ॥

(४२)

सखी री मैं तो गिरधर के रग राती। टेक॥
पचरंग मेरा चोला रगा दे, मैं झुरमट खेलन जाती।
झुरमट में मेरा साँई मिलेगा, खोल अडम्बर गाती॥
चांद जायगा सुरज जायगा, जायगा धरण अकासी।
पवन पाणी दोनों ही जायगे, अटल रहे अविनासी॥
सुरत निरत का दिवला सजो ले, मनसा की कर बाती।
प्रेम हटी का तेल बना ले, जगा करे दिन राती॥
जिनके पिया परदेस बसत हैं, लिखि लिखि भेजे पाती।
मेरे पिय मो माहिं बसत हैं, कहूँ न आती जाती॥
पीहर बसू न बसू सास घर सतगुरु सब्द सँगाती।
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरा हरि रंग राती॥

(४३)

रमैया मैं तो थारे रग राती॥ टेक॥
औरों के पिय परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती।
मेरा पिया मेरेरिदे बसत हैं गूँज करूँ दिन राती॥
चूवा चोला पहिर सखी री, मैं झुरमट रमवा जाती।
झुरमट मे मोहिं मोहन मिलिया खोल मिलू गल बाटी॥
और सखी मद पी पी माती, मैं बिन पियाँ मद माती।
प्रेम भठी को मैं मद पीयो, छकी फिरूँ दिन राती॥

सुरत निरत का दिवला सजोया, मनसा पूरन बाती।
अगम घाणि का तेल सिंचाया, बाल रही दिन राती।।
जाऊँ नी पीहरिये जाऊ नी सासुरिये, सतगुर सैन लगाती।
दासी मीरा के प्रभु गिरधर, हरि चरनां की मैं दासी ॥

(४४)

मैं अपने सैयां सग सांची।
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट ह्वै नाची ॥
दिवस भूख न चैन कबहिन नींद निसु नासी।
वेध वार को पार ह्वैगो, ज्ञान गुह गांसी ॥
कुल कुटुम्ब सब आनि वैठे, जैसे मधु मासी।
दास मीरा लाल गिरधर, मिटी जग हांसी॥

(४५)

कोई कछू कहे मन लागा ॥ टेक ॥
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूँ सोने मे सुहागा॥
जनम जनम का सोया मनुवां, सतगुर सब्द सुण जागा ॥
माता पिता सुत कुटम कबीला, टूट गया ज्यू तागा ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा ॥

(४६)

राग माड

माई मैं तो लियो गोविंदो मोल ॥ टेक ॥
कोइ कहे छानी कोइ कहे चोरी, लियो हैं बजना ढोल ॥

कोइ कहे कारो कोइ कहे गोरो, लियो है मैं आंखी खोल ॥
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारो लियो है तराजू तोल ॥
तन का गहना मैं सब कुछ दीन्हा, दियो है बाजूबंद खोल ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर पुरब जनम का है कौल ॥

(८७)

पिया तेरे नाम लुभाणी हो।
नाम लेत तिरता सुण्या जैसे पाहण पाणी हो ॥ टेक ॥
सुकिरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी हो।
गणिका कीर पढावतां बैकुंठ बसाणी हो ॥
अरध नाम कुंजर लियो, वा की अवध घटानी हो।
गरुग छांडि हरि धाइया, पसु जूण मिटाणी हो ॥
अजामेल से उधरे, जम त्रास नसानी हो।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ॥
नाम महातम गुरु दियो परतीत पिछाणी हो।
मीरा दासी रावली अपणी कर जाणी हो ॥

(८८)

राग प्रभाती

राम नाम मोरे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय।
मैं मन्द भागिण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ॥
बिरहपिंजर की बाड सखी री, उठकर जी हुलसाऊँ ए माय।

मन कूं मार सजूँ सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ॥
डाको नाम सुरत की टोरी, कड्याँ प्रेम चढाऊँ ए माय।
ज्ञान को ढोल वन्यो अति भागी, मगन होय गुण
गाऊँ ए माय ॥
तन करू ताल मन करूं मोरचंग, सोती सुरत जगाऊँ ए माय।
निरत करूँ मे प्रीतम आगे, तो अमरापुर पाऊँ ए माय ॥
मो अबलापर किरपा कीज्यो, गुण गोविंदके गाऊँ ए माय।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, रज चरणाँ की पाऊँ ए माय ॥

(४९)

हेली सुरत सोहागिन नार, सुरत मोरी राम से लगी ॥ टेक ॥
लगनी लहँगा पहिर सोहागिन, वीती जाय वहार।
धन जोवन दिन चार का है, जात न लागी बार ॥
झूठे वर को क्या वरूं जी, अधविच मे तज जाय।
वर वरो ला राम जी, म्हारो चूडो अमर हो जाय ॥
राम नाम का चूडलो हो, निरगुन सुरमो सार।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरि चरणाँ की मैं दास ॥

✓ (५०)

बड़े घर ताली लागी रे, म्हाँरा मन री उणारथ
भागी रे ॥ टेक ॥
छीलरिये म्हाँरो चित नहीं रे, डाबरिये कुण जाव।

गंगा जमुना सूं काम नहीं रे मैं तो जाय मिलूँ दरियाव ॥
हाल्यां मोल्यां सूं काम नहीं रे, सीख नहीं सरदार।
कामदारां सूं काम नहीं रे मैं तो जाब करूं दरबार ॥
काच कथीर सूं काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार।
सोना रूपा सूं काम नहीं रे, म्हारे हीरां री वोपार ॥
भाग हमारो जागियो रे, भयो समद सूँ सीर।
अमृत प्याला छाडि कै, कुण पीवै कड़वो नीर ॥
पीपा कूँ प्रभु परच्यो दीन्हो, दिया रे खजाना पूर।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, धणी मिल्या छै हुजूर ॥

(५१)

॥ चौपाई ॥

ज्यूं अमली के अमल अधारा। यूँ रामैया प्रान हमारा ॥
कोइ निन्दै वन्दै दुख पावै। मोकूँ तो रामैयो भावै ॥

॥ पद ॥

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हांरो कांई करलेसी।
मैं तो गुण गोविंद का गास्यां हो माई ॥
राणो जी रूठ्यां वांरो देस रखासी।
हरि रूठ्यां कुम्हलास्यां हो माई ॥
लोक लाज की काण नमानूं।
निरभै निमाण घुरास्यां हो माई ॥

राम नाम की झाझ चलास्याँ।
भवसागर तर जास्याँ हो माई॥
मीरा सरन सवल गिरधर की।
चरण कवल लपटास्याँ हो माई॥

(५२)

राग हंस नारायण

आली साँवरो कि दृष्टि मानो प्रेम की कटारी है॥ टेक॥
लागत बेहाल भई तन की सुधि बुद्धि गई,
तन मन व्यापो प्रेम मानो मतवारी है॥
सखियाँ मिलि दुइ चारी बावरी सी भई न्यारी,
हौं तो वा को नीके जानो कुंज को बिहारी है॥
चंद को चकोर चाहे दीपक पतंग दहै,
जल बिना मीन जसे तेरो प्रीत प्यरी है॥
बिनती करो हे श्याम लागों मैं तुम्हारे पाम,
मीरा प्रभु ऐसे जानो दासी तुम्हारी है॥

(५३)

मैं तो म्हाँरा रमैयाने देखनो करू री॥ टेक॥
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण तेरो ही ध्यान धरूँ री॥
जहाँ जहाँ पाँव धरूँ धरणी पर, तसाँ तहाँ निरत करूँ री॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणाँ लिपट पड़ूँ री॥

(५४)

मेरे परम सनेही राम की नित ओलू डी आवे ॥ टेक ॥
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कुछ न सुहावै ॥
आवण कह गये अजहुँ न आये, जिवडो अति उकलावै ॥
तुम दरसण की आस रमइया, निस दिन चितवत जावै ॥
चरण कवल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावै ॥
मीरा कूं प्रभु दरसण दीन्हा, आनंद बरण्यो न जावै ॥

(५५)

पिया मोहिं आरत तेरी हो ।
आरत तेरे नाम की, मोहिं साँझ सबेरी हो ॥
या तन को दिवला करूं, मनसा की बाती हो ।
तेल जलाऊँ प्रेम को, बालूँ दिन राती हो ॥
पटियाँ पारूँ गुरुज्ञान की, बुधि माँग सँवारूँ हो ।
पीया तेरे कारणे, धन जोबन वारूँ हो ॥
सेजडिया बहु रंगिया, चंगा फूल बिछाया हो ।
रैण गई तारा गिणत प्रभु अजहुँ न आया हो ॥
आया सावन भादवा, वर्षा ऋतु छाई हो ।
स्याम पधारया सेज में, सूती संत जगाई हो ॥
तुम हो पूरे साइयाँ, पूरा सुख दीजे हो ।
मीरा ब्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजे हो ॥

(५६)

कैसे जिऊ री माई हरि बिन कैसे जिऊँ री ॥ टेक ॥
उदक दादुर पीनवत है, जल से ही उपजाई।
पल एक जल कू मीन बिसरै तलफन मर जाई ॥
पिया बिना पीली भई रे (बाला), ज्यो काठ घुन खाई।
औषध मूल न संचरे रे (बाला), वैद फिर जाई ॥
उदासी होय बन बन फिरूँ रे, बिथा तन छाई।
दास मीरा लाल गिरधर, मिल्या है सुखदाई ॥

(५७)

साजन घर आवो मीठा बोला ॥ टेक ॥
कबकी खडी खडी पंथ निहारूँ, थाँहीं आया होसी भला ॥
आवो निसंक संक मत मानो, आयाँही सुख रहला ॥
तन मन वार करू न्योछावर, दीजो स्याम मोहेला ॥
आतुर बहुत विलम नहि करणा, आयाँही रँग रहेला ॥
तेरे कारन सब रंग त्यागा, काजल तिलक तमोला ॥
तुम देरयाँ बिन कल न परत है, कर धर रही कपोला ॥
मीरा दासी जनम जनम की, दिल की घुडी खोला ॥

(५८)

राग जैजैवती

सोवतही पलका मे मैं तो, पलक लगी पलमे पिउ आये ॥
मैं जु उठी प्रभु आदर देन कूँ, जाग परी पिव ढूँढ़ न पाये ॥

और सखी पिउ सूत गमाये, मैं जु सखी पिउ जागि गमाये ॥
आज की बात कहा कहूँ सजनी, सुपना मे हरि लेत बुलाये ॥
वस्तु एक जब प्रेम की पकरी, आज भये सखि मन के भाये ॥
वो माहरो सुने अरु गुनि है, वाजे अधिक बजाये ॥
मीरा कहे सत्त कर मानो, भक्ति मुक्ति फल पाये ॥

c (५९)

वंशीवारो आयो म्हारे देस, थारी साँवरी सुरत वाली वैस ॥टेक॥
आऊँ जाऊँ कर गया साँवरा, कर गया कौल अनेक।
गिणते गिणते घिस गईं उँगली, घिस गइ उँगलीकी रेख ॥
मैं वैरागिण आदि की, थारे म्हारे कद को सनेस।
बिन पाणी बिन साबुन साँवरा, हुइ गई धुई सपेद ॥
जोगिण हुइ जगल सब हेरूँ, तेरा न पाया भेस।
तेरी सुरत के कारणे, धर लिया भगवा भेस ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, घूँघर वाला केस।
मीरा को प्रभु गिरधर मिल गये, दूणा वढा सनेस ॥

(६०)

राग कान्हरा

आये आये जो म्हारे म्हाराज आये, निज भक्तनके काज बनाये ॥
तज वैकुण्ठ तज्यो गरुडासन, पावन वेग उठ धाये ॥
जब ही दृष्टि परे नँद नन्दन, प्रेम भक्ति रस प्याये ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित लाये ॥

(६१)

ऐसे पिया जान न दीजे हो ॥ टेक ॥
चलो री सखी मिलि राखि के, नैना रस पीजे हो ॥
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखे जीजे हो ॥
जोइ-जोइ भेष सो हरि मिलैं, सोइ सोइ भल कीजे हो ॥
मीरा के गिरधर प्रभू, बड भागन रीझे हो ॥

(६२)

छांडो लँगर मोरी बहियाँ गहो ना ॥ टेक ॥
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ॥
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मेरे प्राण हरो ना ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गली मे, रीत छोड अनरीत करो ना ॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित टारे टरो ना ॥

// (६३)

आवत मोरी गलियन मे गिरधारी, मैं तो छुप गई लाज की मारी ॥ टेक ॥
कुसुमल पाग के केसरिया जामा ऊपर फूल हजारी।
मुकट ऊपरे छत्र विराजे, कुण्डल की छवि न्यारी ॥
केसरी चीर दरयाई को लेंगो, ऊपर अंगिया भारी।
आवते देखी किसन मुरारी, छुप गई राधा प्यारी ॥
मोर मुकट मनोहर सोहै, नथनी की छवि न्यारी।
गल मोतिनकी माल बिराजे चरण कमल बलिहारी ॥

ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुणजे किसन मुरारी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी॥

(४)

राग सुत्र सोरठ

देखो सइयाँ हरि मन काठ कियो॥ टेक॥
आवन कहि गयो अजहु न आयो, करि करि वचन गयो॥
खान पान सुध बुध सब बिसरी कैसे करि म जियो॥
वचन तुम्हारे तुमहिं बिसारे, मन मेरो हर लियो॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो॥

(५५)

राग मलार

डारि गयो मनमोहन पाँसी॥ टेक॥
आंबाकी डालि कोइल इक बोलै, मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी।
बिरह की मारी म बन डोलूँ, प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, तुम मेर ठाकुर म तेरी दासी।

(५६)

राग दुगा

हो गये स्याम दूइन के चंद॥ टेक॥
मधुबन जाइ भये मधुबनिया हम पर डारो प्रेम को फंदा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, अब तो नेह परो कछु मंदा॥

(६७)

अरज करे छे मीरा राकडी,
ऊभी ऊभी अरज करे छे॥
मणि-धर स्वामी म्हारे मदिर पधारो,
सेवा करूँ दिन रातडी॥
फुलना रे तोड़ा ने फुलना रे गजरा,
फुलना रे हार फुल पाँखड़ी॥
फुलना रे गादी ने फुलना रे तकिया,
फुलना रे याथरी पछेड़ी॥
पय पकवान मिठाई ने मेवा,
सेवैयाँ ने सुन्दर दहींड़ी॥
लवंग सुपारी ने एलची,
तज वाला काथा चुना री पान बीड़ी॥
सेज बिछाऊँ ने पासा मगाऊँ,
रमवा आवो तो जाय रातडी॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
(बाला) तम ने जोताँ ठरे आँखड़ी॥

(६८)

तुम पलक उघाडो दीनानाथ, हूँ हाजिर नाजिर
कब की खड़ी॥ टेक॥

साऊ थे दुसमण होइ लागे, सबने लगू कडी।
तुम विन साउ कोऊ नहीं है, डिगी नाव मेरी
समँद अडी ॥
दिन नहीं चैन रात नहिं निदरा, सूपू खडी खडी।
बान विरह के लगे हिये मे, भूलूँ न एक घडी ॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बन के बीच पडी।
कहा बोम मीरा मे कहिये, सौ ऊपर एक धडी ॥
गुरु रैदास मिले मोहिं पूरे, धुर से कमल भिडी।
सतगुरु सैन दई जब आ के, जोत मे जोत रली ॥

(८१)

माई म्हाँरी हरि न बूझी बात।
पिंड मे से प्राण पापी, निक्स क्यूँ नहिं जात ॥
रैण अँधरी विरह घेरी, तारा गिणत निस जात।
ले काटारी कठ चीरूँ, करूगी अपघात ॥
पाट न खोल्या मुखां न बोल्या, साँझ लग परभात।
अबोलना मे अवध बीती, काहे की कुसलात ॥
सुपनमे हरि दरस दीन्हा, म न जाण्यो हरि जात।
नैन म्हाँरा उघडि आया, रही मन पछतात ॥
आवण आवण होय रह्यो रे, नहिं आवण की बात।
मीरा व्याकुल विरहनी रे, बाल ज्यों विल्लात ॥

(७०)

राग दरबारी

प्रभु जी थे कहाँ गयो नेहडी लगाय ॥ टेक ॥
छोड़ गया विस्वास सगाती, प्रेमकी बाती बराय ॥
विरह समँदमे छोड़ गया छो नेह की नाव चलाय ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, तुम विन रह्यो न जाय ॥

(७१)

राग प्रभाती

राम मिलण रो घणो उमावो नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ ॥टेक॥
दरसण विन मोहिं पल न सुहावै, कल न पड़त है
आँखडियाँ ॥
तलफ तलफ के बहु दिन बीते, पड़ी विरह की फाँसड़ियाँ ।
अब तो वेग दया कर साहिब, मैं हू तेरी दासडियाँ ॥
नैण दुखी दरसण को तरसे, नाभि न बैठे साँसड़ियाँ ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखे पासड़ियाँ ॥
लगी लगन छूटण को नाहीं, अब क्यू कीजे आँटड़ियाँ ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पूरो मन की आसड़ियाँ ॥

(७२)

गोविंद कबहुँ मिले पिया मेरा ॥ टेक ॥
चरन कमल को हँस करि देखो, राखों नैनन नेरा ॥

निरगुन की मोहिँ चाव घनेरी, कब देखों मुख तेरा ॥
व्याकुल प्राण धरत नहिं धीरज मिल तूँ मीत सबेरा ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, ताप तपन बहुतेरा ॥

(७३)

राग माड

नातो नाम को मोसूँ तनक न तोड्यो जाय ॥ टेक ॥
पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी रे लोग कहे पिंड रोग ।
छाने लांघन म किया रे, राम मिलण के जोग ॥
बाबुल वैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हाँरी बाँह ।
मूरख वैद मरम नहिं जाणे, करक कलेजे माँह ॥
जाओ वैद घर आपणे रे, म्हाँरो नाँव न लेय ।
मैं तो दाधी विरह की रे, काहे कूँ औषद देय ॥
माँस गलि गलि छीजिया रे, करक रह्या गल आहि ।
आँगुलियाँ की मूँदड़ी, म्हारे आवण लागी बाँहि ॥
रहु रहु पापी पपिहरा रे पिव को नाम न लेय ।
जे कोइ विरहन साम्हले तो पिव कारण जिव देय ॥
खिण मन्दिर खिण आँगणे रे, खिण खिण ठाढ़ी होय ।
घायल ज्यूँ घूमूँ खड़ी, म्हाँरी बिथा न बूझे कोय ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरू रे, कौआ तू ले जाय ।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसे रे, वे देखत तू खाय ॥
म्हाँरे नातो नाम को रे, और न नातो कोय ।

मीरा व्याकुल बिरहनी रे, पिय दरसण दीज्यो मोय ॥

(७८)

स्याम तेरी आरति मागी हो।
गुरु परतापे पाइया तन दुरमति भागी हो ॥
या तन को दियना करो मनसा करो बाती हो।
तेल भरावो प्रेम का वारो दिन राती हो ॥
पाटी पारो ज्ञान की मति माँग सँवारो हो।
तेरे कारन साँवरे धन जोवन वारो हो ॥
यह सेजिया बहु रंग की बहु फूल बिछाये हो।
पंथ मैं जोहौं स्याम का अजहूँ नहिं आये हो ॥
सावन भादों उमडो हो वरषा रितु आई हो।
भौंह घटा घन घेरि के नैनन भरि लाई हो ॥
मात पिता तुम को दियो तुम ही भल जानो हो।
तुम तजि और भतार को मन मे नहिं आनो हो ॥
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो पूरन पद दीजे हो।
मीरा व्याकुल विहरनी अपनी करि लीजे हो ॥

(७९)

राग पहाड़ी

घड़ी एक नहिं आवडे तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राण जी, का सूं जीवण होय ॥
धान न भावे नींद न आवे, बिरह सतावे मोय।
घायलसी घूमत फिरूँ रे, मेरा दरद न जाणे कोय ॥

दिवस तो खाय गमायो रे, रैण गमाई सोय।
प्राण गमायो झूरतां रे, नैण गमाई रोय॥
जो मैं ऐसा जाणती रे प्रीत किये दुख होय।
नगर ढंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोय॥
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोय।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय॥

(७६)

राग आनंद भैरों

सखी मेरी नींद नसानी हो। टेक।
पिया को पंथ निहारते, सब रैन बिहानी हो॥
सखियन मिल के सीख दई, मन एक न मानी हो।
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो॥
अंग छीन व्याकुल भई, मुख पिय पिय बानी हो।
अन्तर वेदन विरह की, वह पीर न जानी हो॥
ज्यों चातक घन को रटे, मछरी जिमि पानी हो।
मीरा व्याकुल विरहनी, सुध बुध बिसरानी हो॥

(७७)

राग हमीरी

रमैया बिन नींद न आवे।
नींद न आवे विरह सतावे, प्रेम की आँच डुलावे॥ टेक॥
बिन पिया जोत मंदिर अँधियारो दीपक दाय न आवे।

पिया बिन मेरी सेज अलूनी, जागत रैण विहावे ।
पिया कब रे घर आवे ॥ १ ॥
दादुर मोर पपिहरा बोलै, कोयल सबद सुणावे ।
घुमड घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावे ।
नैन भर लावे ॥ २ ॥
कह. करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, वेदन कूण बुतावे ।
विरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावे ।
जड़ी घस लावे ॥ ३ ॥
को है सखी सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावे ।
मीरा कूँ प्रभु कब रे मिलोगे, मन मोहन मोहिं भावे ।
कबै हँस कर बतलावै ॥ ४ ॥

(७८)

नींदलड़ी नहिं आवै सारी रात, किस विध होइ परभात ॥टेक॥
चमक उठी सुपने सुध भूली, चन्द्र कला न सोहात ॥
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कब रे मिले दीना-नाथ ॥
भई हुँ दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हांरी बात ॥
मीरा कहै बीती सोइ जानै, मरण जीवण उन हाथ ॥

(७९)

राग सारंग

रे पपइया प्यारे कब को वैर चितारो ॥ टेक ॥
मैं सूती छी अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारो ॥

दाग्या ऊपर लूण लगायो, हिवडे करवत सारो ॥
उठि बैठो कुम्भ री डाली, बोल बोल कठ सारो ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरनां चित धारो ॥

(८०)

राग मारुनी कल्याण

पपइया रे पिव की वाणि न बोल ॥ टेक ॥
सुणि पावेली बिरहणी, थारो रालेली पाँख मरोड़ ।
चाच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूण ।
पिव मेरा मैं पिव की रे तू पिव कहै स कूण ।
थारा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेला आज ।
चाच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज ।
प्रीतम कूँ पतियाँ लिखूँ, कउवा तू ले जाइ ।
जाइ प्रीतम जी सूं यूँ कहै रे थाँरी बिरहणि धान न खाइ ।
मीरा दासी व्याकुली रे, पिव पिव करत बिहाइ ।
वेगि मिलो प्रभु अन्तरजामी तुम बिन रह्यो ही न जाइ ।

(८१)

जाओ हरि निरमोहड़ा रे, जाणी थाँरी प्रीत ॥ टेक ॥
लगन लगी जब और प्रीत छी, अब कुछ अँवली रीत ॥
अमृत पाय विषै क्यूँ दीजे, कौण गाँव की रीत ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर आप गरज के मीत ॥

(८२)

राग बागेश्वरी

मैं विरहिन बैठी जागूँ, जगत सब सोवै री आली ॥ टेक ॥
विरहिन बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पोवै।
इक विरहिन हम ऐसी देखी, असुअन की माला पोवै ॥
तारा गिण गिण रैण विहानी, सुखकी घड़ी कब आवै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल के विछुड़ न जावै ॥

(८३)

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी ॥ टेक ॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, तलफ तलफ जिय जासी ॥
तेरे खातर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल की दासी ॥

(८४)

राग पूरिया कल्याण

साजन सुध ज्यूँ जाने त्यूँ लीजे हो ॥ टेक ॥
तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरी कीजे हो ॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा यूँ तन पल पल छीजे हो ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुरन नहिं कीजे हो ॥

(८५)

राग तिलंग

नैना लोभी रे बहुरि सके नहिं आय।
रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहे ललचाय ॥

मैं ठाढ़ी गृह आपने रे, मोहन निकसे आय।
सारंग ओट तजे कुल अंकुस, बदन दिये मुसकाय॥
लोक कुटंबी बरज बरजहीं, बतियाँ कहत बनाय।
चंचल चपल अटक नहि मानत, पर हथ गये बिकाय॥
भलो कहो कोइ बुरी कहो मैं, सब लई सीस चढ़ाय।
मीरा कहे प्रभु गिरधर के बिन, पल भर रह्यो न जाय॥

(८६)

नैणा मोरे बाण पड़ी, माई मोहि दरस दिखाई॥ टेक॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी।
कैसे प्राण पिया बिनु राखूं, जीवण मूर जड़ी॥
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपणे भवन खड़ी।
मीरा प्रभु के हाथ बिकानी, लोक कहे बिगड़ी॥

(८७)

राग देस

दरस बिन दूखन लागे नैन॥ टेक॥
जबसे तुम बिछुरे मेरे प्रभुजी, कबहुँ न पायो चैन।
सबद सुनत मेरी छतियाँ कंपै मीठे लगे तुम बैन॥
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छमासी रैन॥
बिरह बिथा कासूं कहूं सजनी, बह गइ करवत अैन॥
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे दुख मेटन सुख देन॥

(८८)

राग गमोद

आली रे मेरे नेनन वान पडी ॥ टेक ॥
चित्त चढी मेरे माधुरी मूरत, उर विच आन अडी ॥
कन की ठाढी पंथ निहारू अपने भवन खडी ॥
कैसे प्रान पिया विन राखू जीवन मूल जडी ॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहै विगडी ॥

(८९)

पिया अब घर अब आज्यो मोरे, तुम मोरे हूँ तोरे ॥ टेक ॥
मैं जन तेरा पंथ निहारू, मारग चितवत तोरे ॥
अवध बदीती अजहु न आये दुतियन सूँ नेह जोरे ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, दरसन बिन दिन दोरे ॥

(९०)

राग जंगला

कभी म्हारो गली आन रे, जिया की तपत बुझाव रे
म्हारे मोहना प्यारे ॥ टेक ॥
तेरे साँवले वदन पर कई कोट काम वारे ॥
तेरा मूखी के दरस पे, नेन तरसते म्हारे ॥
घायल फिरू तडपती पीड जाने नहिं कोई ॥
जिस लागी पीर प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ॥
जैसे जल के सोखे, मीन क्या जिवें बिचारे ॥
कृपा कीजे दरस दीजे मीरा नन्द के दुलारे ॥

(९१)

वारी वारी हो राम हूँ वारी तुम आज्यो गली हमारी ॥टेक॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जोऊँ वाट तुमारी ॥
कूण सखी सूं तुम रंग राते हम सूँ अधिक पियारी ॥
किरपा कर मोहिं दरसण दीज्यो सब तकसीर बिसारी ॥
तुम सरणागत परम दयाला भवजल तार मुरारी ॥
मीरा दासी तुम चरणन की बार बार बलिहारी ॥

(९२)

मैं तो लागि रहो नन्दलाल से ॥ टेक ॥
हमरे चाटहिं दूजा न यार।
लाल लाल पगिया भिन भिन वार ॥
साँकर खटुलना दुइ जन बीच।
मन कइले चरणा तन कइले कीच ॥
कहाँ गइलें बछरूँ कह गइली गाय।
कह गइल धेनु चरावन राय ॥
कह गइलीं गोपी कह गइलें बाल।
कहँ गइले मुरली बजावनहार ॥
मीरा के प्रभु गिरधर लाल।
तुम्हरे दरस बिन भइल बेहाल ॥

(९३)

राग टोडा

म्हारे घर आज्यो प्रीतम प्यारा तुम बिन सब जग
खारा ॥ टेक ॥

तन मन धन सब भेट करूँ, और भजन करूँ मैं थांरा ।
तुम गुणवंत वड़े गुण सागर मैं हूँ जी औगणहारा ॥
मैं निगुणी गुण एको नाहीं तुझ मे जी गुण सारा ॥
मीरा कहे प्रभु कबहि मिलोगे, बिन दरसण दुखियारा ॥

(९४)

धुन लावना

तुम्हरे कारण सब सुख छोड्यो, अब मोहिं क्यूं तरसावो ॥
बिरह बिथा लागी उर अन्दर, सो तुम आय बुझावो ॥
अब छोड्यां नहिं बनै प्रभु जी हस कर तुरत बुलावो ॥
मीरा दासी जनम जनम की, अंग सूँ अंग लगावो ॥

(९५)

तुम आज्यो जी रामा, आवत आस्यां सामा ॥ टेक ॥
तुम मिलियां मैं बहु सुख पाऊं सरें मनोरथ कामा ॥
तुम बिच हम बिच अन्तर नाहीं जैसे सूरज घामा ॥
मीरा के मन और न मानै, चाहे सुन्दर स्यामा ॥

(९६)

होता जाजो राज हमारे महलों होता जाजो राज ॥ टेक ॥

मैं औगुनी मेरा साहिब अगुना, संत सँवारैं काज ॥
मीरा के प्रभु मँदिर पधारो, करके केसरिया साज ॥

(९७)

राग आसावरी

प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
जल बिन कँवल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन
सजनी ।
याकुल व्याकुल फिरूँ रैण दिन, बिरह कलेजो खाय ॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैणा मुख सूँ कथत न आवै बैणा ।
कहा कहूँ कुछ कहत न आवै, मिलकर तपत बुझाय ॥
क्यूँ तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी ।
मीरा दासी जनम जनम की परी तुम्हारे पाय ॥

(९८)

पिया इतनी बिनती सुन मोरी, कोइ कहियो रे जाय ॥ टेक ॥
औरन सूँ रस बतियां करत हो, हमसे रहे चित चोरी ॥
तुम बिन मेरे और न कोई, मैं सरणागत तोरी ॥
आवण कह गये अजहुँ न आये, दिवस रहे अब थोरी ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करूँ कर जोरी ॥

(९९)

हमरे रौरे लागलि कैसे छूटै ॥ टेक ॥
जैसे हीरा हनत निहाई, तैसे हम रौरे बनि आई ॥
जैसे सोना मिलत सोहागा, तैसे हम रौरे दिल लागा ॥

जैसे कमल नाल बिच पानी, तैसे हम रौरे मन मानी ॥
जैसे चन्दहि मिलत चकोरा, तैसे हम रौरे दिल जोरा ॥
जैसे मीरा पति गिरधारी, तैसे मिलि रहु कुंज बिहारी ॥

(१००)

प्रेम नी प्रेम नी प्रेम नी रे, मन लागी कटारी
प्रेम नी रे ॥ टेक ॥
जल जमुना माँ भरवा गया ताँ, हती गागर माथे
हेम नी रे ॥
काँचे ते ताँत ने हरिजीये बाँधी, जेम खेंचे तेमनी रे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साँवली सुरत सुभ एमनी रे ॥

(१०१)

बैद को सारो नाहीं रे माई, बैद को नहिं सारो ॥ टेक ॥
कहत ललिता बैद बुलाऊँ आवै नंद को प्यारो ।
वो आयाँ दुःख नाहिं रहेगो, मोहि पतियारो ॥
बैद आय के हाथ जो पकड़्यो, रोग है भारो ।
परम पुरुष की लहर व्यापी डस गयो कारो ॥
मोरचंदो हाथ ले, हरि देत है डारो ।
दासी मीरा लाल गिरधर, विष कियो न्यारो ॥

(१०२)

राग देस

चलाँ वाही देस प्रीतम पावाँ, चलाँ वाही देस ॥ टेक ॥
कहो कसुम्बी सारी रँगावाँ, कहो तो भगवा भेस ॥

कहो तो मोतीयन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुनियो विरद के नरेस ॥

(१०३)

मेरे प्रीतम प्यारे राम ने लिख भेजूं री पाती ॥ टेक ॥
स्याम सनेसो कबहुं न दीन्हो, जान बूझ गुझ बाती ॥
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं रोय रोय अँखियाँ राती ॥
तुम देख्याँ बिन कल न परत है, हियो फटक मोरी छाती ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, पूर्व जनमके साथी ॥

(१०४)

स्यामको सँदेसो आयो, पतियाँ लिखाय माय ॥ टेक ॥
पतियाँ अनूप आई, छतियाँ लगाय लीनी।
अचल की दे दे ओट, ऊधो पे बँचाई है ॥
बाल की जटा बनाऊँ अंग तो भभूत लाऊं।
फाड़ूँ चीर पहरूं कंथा, जोगण बण जाऊगी ॥
इन्द्र के नगारे बाजे बादलकी फौज आई।
तोपखाना पेसखाना उतरा आय बाग मे ॥
मथुरा उजाड़ कीन्हीं, गोकुल बसाय लीन्हीं।
कुबजा सूँ बाँध्यो हेत, मीरा गाय सुनाई है ॥

(१०५)

कूण बाँचे पाती, बिन प्रभु कूण बाँचे पाती ॥ टेक ॥
कागद ले ऊधो जी आये, कहाँ रहे साथी।
आवत जावत पाँव घिसा रे (बाला) अँखियाँ भईं राती ॥

कागद ले राधा बाँचण जेठी, भर आई छाती।
नैन नीरज मे अम्ब वहे रे (वाला), गंगा वहि जाती॥
पाना ज्यूँ पीली पडी रे (वाला), अन्न नहिं खाती।
हरि बिन जिवडो यूं जले रे (वाला), ज्यू दीपक सग बाती॥
साँचा कुछ चकोर चन्दा, झोले वहि जाती।
व्रज नारी की बीनती रे (वाला), राम मिले मिल जाती॥
मनै भरोसो राम को रे (वाला), डूबत तार्‌यो हाथी।
दास मीरा लाल गिरधर, साँकडारो साथी॥

(१०६)

राग सुख सोरठ

पतियाँ मे कसे लिखू, लिखिही न जाई॥ टेक॥
कलम भरत मेरे कर कपत, हिरदो रहो घर्राई॥
बात कहूं मोहिं बात न आवै, नैण रहे झर्राई॥
किस विधि चरण कमल मे गहिहो सबहि अंग थर्राई॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सब ही दुख बिसराई॥

(१०७)

राग सारग

या व्रज मे कछु देख्यो री टोना॥ टेक॥
ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा
नंदजी के छोना।
दधि को नाम बिसरि गयो प्यारी, ले लेहु रे कोई स्याम
सलोना॥

बिन्द्रावन की कुञ्ज गलिन मे, आँग लगाइ गयो मनमोहना।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर स्याम सुघर रसलोना॥

(१०८)

राग माँड

कोइ स्याम मनोहर ल्योरी सिर धरें मटकिया डोलें ।।टेक।।
दधि को नाँव बिसर गई ग्वालन, हरि ल्यो हरि ल्यो बोलै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोलै।
कृष्ण रूप छकी है ग्वालनि, औरहि औरे बोलै।

(१०९)

राग जौनपुरी

सखी री लाज बैरन भई॥ टेक॥
श्री लाल गोपाल के सग काहे नाहीं गई॥
कठिन क्रूर अक्रूर आयो साजि रथ कहँ नई॥
रथ चढाय गोपाल लै गो हाथ मींजत रही॥
कठिन छाती स्याम बिछुरत बिरह तें तन तई॥
दास मीरा लाल गिरधर बिखर क्यो ना गई॥

(११०)

गोविंद सूँ प्रीत करत, तबहिं क्यूँ न हटकी।
अब तो बात फैल परी जैसे बीज बट की॥

बीज को निचार नाहिं छीय परी तट की।
अव चूको तो ठौर नाहिं जसे कला नट की॥
जल की घुरी गांठ परी, रसना गुन रट की।
अब तो छुडाय हारी, बहुत वार झटकी॥
घर घर में घोल मठोल, वानी घट घट की।
सब ही कर सीस धारि, लोक लाज पटकी॥
मद की हस्ती समान, फिरत प्रेम लटकी।
दास मीरा भक्ति बुन्द, हिरदय बिच गटकी॥

(१११)

राग धमार

स्याम मोसूँ पैंडो डोले हो॥ टेक॥
औरन सूँ खेले धमार, म्हां सूं मुखहुँ न बोले हो॥
म्हांरी गलियाँ ना फिरे, वा के आंगण डोले हो॥
म्हांरी अँगुली ना छुवे, वा की बहियाँ मोरे हो॥
म्हारे अँचरा ना छुवे, वा को घूंघट खोले हो॥
मीरा को प्रभु सांवरो, रंग रसिया डोले हो॥

खण्ड ३

होली और सावन

(११२)

राग होरी सिंदूरा

फागुन के दिन चार रे, होली खेल मना रे ॥ टेक ॥
बिन करताल पखावज बाजे, अनहद की झनकार रे ॥
बिन सुर राग छतीसूँ गावे रोम रोम रँग सार रे ॥
सील सँतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे ॥
घटके पट सब खोल दिये हैं, लोक लाज सब डार रे ॥
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरन कँवल बलिहार रे ॥

(११३)

रँग भरी रँग भरी रंग सूँ भरी री,
होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री ॥ टेक ॥

उड़त गुलाल लाल भये बादल,
पिचकारिन की लागी झरी री ॥
चोवा चन्दन और अरगजा,
केसर गागर भरी धरी री ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर,
चेरी होय पायन परी री ॥

(११८)

राग होली

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी मेरी प्यारी ॥टेक॥
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहन पिव बिन डोलै, तज दइ पीव पियारी।
भई हूँ या दुखकारी।
देस बिदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी।
गिणताँ गिणताँ घस गई रेखा, आँगरियाकी सारी।
अजहुँ नहिं आये मुरारी।
बाजत झाँझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आई बसंत कंथ घर नाहीं, तन मे जर भया भारी।
स्याम मन कहा बिचारी।
अब तो मेहर करो मुझ ऊपर, चित दे सुणो हमारी।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो जनम जनमकी क्वाँरी।
लगी दरसन की तारी।

(११५)

राग होली

होली पिया विन मोहिं न भावे, घर आँगण न सुहावे ॥ टेक ॥
दीपक जोय कहा करूँ होली, पिय परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक सुसक जिय जावे ।
नींद नैन नहिं आवे ॥
कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊँ, निस दिन विरह सतावे ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे ।
पिया कब दरस दिखावे ॥
ऐसा है कोइ परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे ।
वा विरियाँ कब होसी मोकूँ, हँसकर निकट बुलावे ।
मीरा मिल होली गावे ॥

(११६)

राग होली

किण सँग खेलूँ होली, पिया तज गये हैं अकेली ॥ टेक ॥
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली ।
भोजन भवन भलो नहिं लागे, पिया कारण भई गेली ।
मुझे दूरी क्यूँ म्हेली ॥
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हमसे करी क्यूँ पहिली ।
बहु दिन बीते अजहुँ नहिं आये, लग रही तालावेली ।
किण बिलमाये हेली ॥

स्याम बिना जियडो मुरझावे, जैसे जल बिन बेली।
मीरा कूँ प्रभु दरसन दीज्यो, जनम जनम की चेली।
दरसन बिन खडी दुहेली॥

(११७)

इक अरज सुनो पिय मोरी मैं किण सग खेलूं होरी॥ टेक॥
तुम तो जाय बिदेसां छाये, हम से रहे चित चोरी।
तन आभूपण छोडे सबही, तज दिये पाट पटो री।
मिलनकी लग रही डोरी॥
आप मिल्यां बिन कल न पडत है, त्यागे तलक तमोली।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी।
रस बिन बिरहिन दोरी॥

(११८)

राग सावन

मतवारो बादल आयो रे, हरि के संदेसो कुछ नहिं लायो रे॥ टेक॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सब्द सुनायो रे।
कारी अँधियारी बिजुली चमके, बिरहन अति डरपायो रे॥
गाजे बाजे पवन मधुरिया, मेहा अति झड लायो रे।
फूँके काली नाग बिरह की जारी, मीरा मन हरि भायो रे॥

(११९)

राग मलार

बादल देख झरी हो, स्याम मैं बादल देख झरी ॥ टेक ॥
काली पीली घटा उमँगी, बरसयो एक घरी ॥
जित जाऊँ तित पानिहि पानी, हुई सब भोम हरी ॥
जा का पिव परदेस बसत है, भीजै बार खरी ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, कीज्यो प्रीत खरी ॥

(१२०)

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आओ जो स्याम मोरा रे ॥टेक॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, गरजत है घन घोरा रे ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा रे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ज्यो वारूँ सोही थोरा रे ॥

(१२१)

भींजे म्हारो दाँवन चीर, सावणियो लूम रह्यो रे ॥ टेक ॥
आप तो जाय बिदेसाँ छाये, जिवड़ी धरत न धीर ॥
लिख लिख पतियाँ सँदेसा भेजूँ, कब घर आवे म्हाँरो पीव ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दरसन दोने बलबीर ॥

(१२२)

राग कलिंगड़ा

सुनी मैं हरि आवन की आवाज ॥ टेक ॥
महल चढ़ि चढ़ि जोऊँ मोरी सजनी, कब आवे म्हाराज ॥
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोइल मधुरे साज ॥

उमग्यो इन्द्र चहूँ दिस वरसै, दामिन छोडी लाज ॥
धरती रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र मिलन के काज ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, वेग मिलो म्हाराज ॥

(१२३)

वरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावनकी ॥ टेक ॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनि हरि आवनकी ॥
उमड घुमड़ चहुँ दिससें आयो, दामिन दमके झर लावनकी ॥
नन्ही नन्ही बूँदन मेहा वरसे सीतल पवन सोहावनकी ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनन्द मंगल गावनकी ॥

(१२४)

राग मारग

नन्द नँदन विलमाई, बदरा ने घेरी माई ॥ टेक ॥
इत घन लरजे उत घन गरजे, चमकत विज्जु सवाई ॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, पवन चले पुरवाई ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सब्द सुनाई ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरन कमल चित लाई ॥

(१२५)

मेहा वरसबो करेरे, आज तो रमियो मेरे घरे रे ॥ टेक ॥
नान्ही नान्ही बूँद मेघ घन वरसे, सूखे सरवर भरे रे ॥
बहुत दिनां पै प्रीतम पायो, बिछुरन को मोहिं डर रे ॥
मीरा कहे अति नेह जुड़ायो, मैं लियो पुरवलो वर रे ॥

(१२६)

देखी बरषा की सरसाई, मोरे पिया जी की मन में आई ॥टेक॥
नन्ही नन्ही बूँदन बरसन लाग्यो, दामिन दमके झर लाई ॥
स्याम घटा उमडी चहुँ दिस से, बोलन मोर सुहाई ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनँद मंगल गाई ॥

(१२७)

राग नट बिलावल

रे सांवलिया म्हारे आज रँगीली गणगोर छे जी ॥ टेक ॥
काली पीली बदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छे जी ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छे जी ॥
आप रँगीला सेज रँगीली, और रँगीलो सारो साथ छे जी ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरनां में म्हांरो जोर छे जी ॥

खण्ड ४

संतधारा

(१२८)

राग शुद्ध सारंग

चलो अगम के देस काल देखत डरे।
वहाँ भरा प्रेम का हौज हंस केलौं करे॥ टेक॥
ओढन लज्जा चीर धीरज को घाघरो।
छिमता काँकण हाथ सुमत को मुन्दरो॥
काँचो है निस्वारा चूडो चित ऊजलो।
दिल दुलडी दरियाव साँच को दोवडो॥
दाँतौं अमृत मेल दया को बोलणो।
उबटन गुरु को ज्ञान ध्यान को धोवणो॥
कान अखोटा ज्ञान जुगत को झठणो।
वेसर हरि को नाम काजल है धरम को॥
जौहर सील सँतोष निरत को घूँघरो।
बिँदली गज और हार तिलक गुरु ज्ञान को॥
सज सोलह सिँगार पहिरि सोने राखड़ी।

साँवलिया सूँ प्रीत औरों से आखड़ो ॥
पतिवरता की सेज प्रभु जी पधारिया ।
गावैं मीरा बाई दासी कर राखिया ॥

(१२९)

भर मारी रे बानां मेरे सतगुरु विरह लगाय के ॥ टेक ॥
पावन पंगा कानन बहिरा, सूझत नाहीँ नैना ॥
खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूँ, मरम न कोई जाना ॥
सतगुरु औषद ऐसी दीन्ही, रूम रूम भइ चैना ॥
सतगुरु जस्या बैद न कोई, पूछो बेद पुराना ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, अमर लोक में रहना ॥

(१३०)

आज म्हारे साधू जन नो संग रे, राणा म्हांरा भाग भल्यां ॥टेक॥
साधू जन ने संग जो करिये, चढ़ते चौगणो रंग रे ॥
साकट जन नो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ॥
अठसठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने सोय गंग रे ॥
निन्दा करसे नरक कुँडमांजासे, थासे आंधला अपंग रे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, संतों नीरज म्हांरे अंग रे ॥

(१३१)

मनखा जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुर न आती ॥ टेक ॥
अब के मोसर ज्ञान विचारो, राम राम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया सुंज पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ॥

सगुरा सूरा अमृत पीवे निगुरा प्यासा जाती।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोविंद का गुण गाती॥
साहब पाया आदि अनादी, नातर भव में जाती।
मीरा कहे इक आस आप की, औरां सू सकुचाती॥

(१३२)

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी॥ टेक॥
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी॥
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी॥
ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी॥
ऐसा वैद मिले कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी॥
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नाहँ भरमों खानी॥
खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी॥
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी॥
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी॥
मीरा खाक खलक सिर डारो, मैं अपना घर जानी॥

(१३३)

मुझ अबला ने मोटी नीरांत थई सामलो घरेनु
म्हांरे सांचु रे॥ टेक॥
वाली घडाऊँ बीठल वर केरी, हार हरि नो म्हांरे हइये रे।
चीन माल चतुरभुज चुडलो, सिद सोनी घरे जइये रे॥
झांझरिया जग जीवन केरा, किस्न गलां री कंठी रे।

बिछुवा घुँघरा राम नरायण अनवट अंतरजामी रे ॥
पेटी घड़ाऊँ पुरुसोतम केरी, टीकम नाम नूँ ताली रे ।
कुँची कराऊँ करुना नँद केरी, तेमां घैणा नूँ मालूँ रे ॥
सासर वासो सजी ने बैठी, हवे नथी काइ कांचू रे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि नु चरणे जाँचू रे ॥

(१३४)

राग जैजैवती

गली तो चारो बंद हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाय ॥ टेक ॥
ऊँची नीची राह रपटीली पाँव नहीं ठहराय ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाय ॥
ऊँचा नीचा महल पिया का, हम से चढ़्या न जाय ।
पिया दूर पंथ म्हाँरा झीना, सुरत झकोला खाय ॥
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड बटमार ।
हे विधना कैसी रच दीन्ही, दूर बस्यो म्हाँरो गाम ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सतगुरु दई बताय ।
जुगन जुगन से बिछुड़ी मीरा, घर में लीन्हा आय ॥

(१३५)

राग जोगिया

बाल्हा मैं बैरागिण हूँगी हो ।
जीँ जीँ भेप म्हाँरो साहिब रीझै, सोइ सोइ भेप धरूँगी हो ॥ टेक ॥
सील संतोप धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो ।

जा को नाम निरंजण कहिये, ता को ध्यान धरूंगी हो ॥
गुरू ज्ञान रंगूं तन कपडा मन मुद्रा पेरूंगी हो।
प्रेम प्रीत सूं हरिगुण गाऊं, चरणन लिपट रहूंगी हो ॥
या तन की मैं करूं कींगरी, रसना नाम रटूंगी हो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, साधां संग रहूंगी हो ॥

(१३६)

मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहिं पिया मिले
इक छिन में ॥ टेक ॥
पिया मिल्या मोहिं कृपा कीन्ही, दीदार दिखाया हरि ने ॥
सतगुरु सबद लखाया अस री, ध्यान लगाया धुन में ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मगन भई मेरे मन में ॥

(१३७)

नैनन बनज बसाऊँ री, जो मैं साहिब पाऊँ ॥ टेक ॥
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाऊँ री ॥
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहां से झांकी लगाऊँ री ॥
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बल जाऊँ री ॥

(१३८)

राग सारंग

इन सरवरिया पाल मीरां बाई सांपड़े।
सांपड़ किया अस्नान, सुरज स्वामी जप करे ॥

[प्रश्न] होय विरंगी नार, डगरां बिच क्यों खड़ी।
काईं थारो पीहर दूर, घरां सासू लड़ी॥
[उत्तर] नहीं म्हारो पीहर दूर, घरां सासू लड़ी।
चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी॥
गुरु म्हांरा दीनदयाल हीरां का पारखी।
दियो म्हांने ज्ञान बताय, सगत कर साध री॥
इन सरवरिया रा हंस, सुरँग थारी पाँखड़ी।
राम मिलन कद होय, फड़ोके म्हांरी आंख री॥
राम गये बनवास को, सब रँग ले गये।
ले गये म्हांरी काया को सिंगार, तुलसी की माला दे गये॥
खोई कुल की लाज, मुकँद थारे कारने।
बेगहि लीजो सम्हाल, मीरा पड़ी बारने॥

(१३९)

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाय परूं मैं चेरी तेरी हौं॥
प्रेम भगति को पैंड़ो ही न्यारो, हम कूं गैल बता जा॥
अगर चंदन की चिता रचाऊं, अपणे हाथ जला जा॥
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा॥

(१४०)

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई॥ टेक॥
तेरेहि कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई॥

दिवस भूख रैन नहि निद्रा, तुझ बिन कुछ न सुहाई ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल कर तपत बुझाई ॥

(१४१)

जावादे री जावादे जोगी किसका मीत ॥ टेक ॥
सदा उदासी मोरी सजनी निपट अटपटी रीत ॥
बोलत वचन मधुर से मीठे जोरत नाहीं प्रीत ॥
हूँ जाणू या पार निभेगी छोड चला अधबीच ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, प्रेम पियारा मीत ॥

(१४२)

जोगिया री सूरत मन में वसी ॥ टेक ॥
नित प्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निस दिन होत खुसी ॥
कहा करू कित जाउँ मोरी सजनी, मानो सरप डसी ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली वसी ॥

(१४३)

जोगिया री प्रीतडी है, दुखडा री मूल ॥ टेक ॥
हिल मिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ॥
तोडत जेज करत नहिं सजनी जैसे चपेली के फूल ॥
मीरा कहे प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लगत हिवडा मे सूल ॥

(१४४)

जोगिया ने कहियो रे आदेस ।
आऊ गी मैं नाहिं रहूँ रे, कर जटाधारी भेस ॥
चीर को फाडूँ कथा पहिरूँ, लेऊँगी उपदेस ।

गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उँगलियों की रेख ॥
मुद्रा माला भेष लूँ रे खप्पड़ लेऊँ हाथ।
जोगिन होय जग ढूँढ़सूँ रे, रावलिया के साथ ॥
प्राण हमारा वहाँ बसत है, यहाँ तो खाली खोड़।
मात पिता परिवार सूँ रे, रही तिनका तोड़ ॥
पाँच पचीसो बस किये, मेरा पल्ला न पकड़े कोय।
मीरा व्याकुल विरहिनी, कोइ आन मिलावे मोय ॥

(१४५)

कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ॥ टेक ॥
आसण मांड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ॥
मैं तो जाणूँ जोगी संग चलेगा, छाँड़ गयो अधबीच ॥
आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किस का मीत ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत ॥

(१४६)

मिलता जाज्यो हो गुर ज्ञानी, थाँरी सूरत देखि लुभानी ॥
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूँ बिरह दिवानी ॥
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी ॥
दरस बिना मोहि कछु न सुहावे, तलफ तलफ मर जानी ॥
मीरा के चरणन की चेरी, सुन लीजे सुखदानी ॥

[मीरा]-नहिं हम पूजां गोरज्या जी, नहिं पूजां अनदेव ।
परम सनेही गोविंदो, थे कांइ जानो म्हांरो भेव ॥ २ ॥
[सास]-बाल सनेही गोविंदो, साथ संतां को काम ।
थे बेटी राठोड़ की, थां ने राज दियो भगवान ॥ ३ ॥
[मीरा]-राज करै ज्यानां करणे दीज्यो, मैं भगतां री दास ।
सेवा साधू जनन की, म्हांरे राम मिलण की आस ॥ ४ ॥
[सास]-लाजे पीहर सासरो, माइतणो मोसाल ।
सब ही लाजे मेड़तिया जी, थांसूं बुरा कहे संसार ॥ ५ ॥
[मीरा]-चोरी करां न मारगी, नहि मैं करूं अकाज ।
पुन्न के मारग चालतां, झक मारो संसार ॥ ६ ॥
नहि मैं पीहर सासरे, नहीं पिया जी री साथ ।
मीरा ने गोविंद मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास ॥ ७ ॥

(१०९)

[ऊदा]-भाभी मीरा कुल ने लगाई गाल,
ईडर गढ़ का आया जी ओलंबा ।
[मीरा]-बाई ऊदा थारे म्हांरे नातो नाहिं,
वासो बस्यां का आया जी ओलंबा ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा का साधां का सग निवार,
सारो सहर थांरी निंदा करै ।
[मीरा]-बाई ऊदा करे तो पड़्या मत्त मारो,
मन लागो रमता राम सूं ॥

[ऊदा]-भाभी मीरा पहरोनी मोत्यां को हार,
गहणो पहरो रतन जड़ाव को।
[मीरा]-बाई ऊदा छोड्यो मैं मोत्यां को हार,
गहणो तो पहर्‌यो सील संतोष को॥
[ऊदा]-भाभी मीरा औरां के आवेजी आछी स्डी जान,
थांरे आवे छै हरिजन पावणा।
[मीरा]-बाई ऊदा चढ चौबारां झांक,
साधां की मडली लागे सुहावणी॥
[ऊदा]-भाभी मीरा लाजे लाजे गढ चीतौड़,
राणोजी लाजे गढ रा राजवी।
[मीरा]-बाई ऊदा तार्‌यो तार्‌यो गढ़ चीतौड,
राणाजी तार्‌या गढ़ का राजवी॥
[ऊदा]-भाभी मीरा लाजे लाजे थांरा मायन बाप,
पीहर लाजे जी थांरो मेडतो।
[मीरा]-बाई ऊदा तार्‌या मैं तो मायन बाप,
पीहर तार्‌यो जी मेडतो॥
[ऊदा]-भाभी मीरा राणा जी कियो छै थां पर कोप,
रतन कचोले विष घोलियो।
[मीरा]-बाई ऊदा घोल्यो तो घोलण दो,
कर चरणामृत वाही मैं पीजस्यां॥
[ऊदा]-भाभी मीरा देखतडां ही मर जाय,
यो विष कहिये वासक नागको।

[मीरा]-बाई ऊदा नहीं म्हांरे मायन बाप,
अमर डाली धरती भेलिया ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा राणा जी ऊभा छे थांरे द्वार,
पोथी मांगे छे थांरा ज्ञान की।
[मीरा]-बाई ऊदा पोथी म्हांरी खांड़ा की धार,
ज्ञान निभावण राणो हैं नहीं ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा राणाजी रो वचन न लोप,
उन रूठ्यां भाड़ी कोउ नहीं।
[मीरा]-बाई ऊदा रमापति आवे म्हारी भीड़,
अरज करूँ छूँ ता सूं बीनती ॥

(१५०)

[ऊदाबाई]-थांने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानो बात हमारी ॥
राणे रोस कियो थां ऊपर, साधों में मत जा री।
कुल को दाग लगै छै भाभी, निंदा हो रही भारी ॥
साधों रे सँग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी।
बड़ा घरा थे जनम लियो छै, नाचो दे दे तारी ॥
वर पायो हिंदवाण सूरज थें कांई मन धारी।
मीरा गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ॥
[मीराबाई]-मीरा बात नहीं जग छानी, ऊदाबाई समझो
सुघर सयानी ॥
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी।
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूं बानी ॥

राणा ने समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, संतां हाथ बिकानी॥

[ऊदाबाई]-भाभी बोलो बचन बिचारी।
साधां की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी॥
छापा तिलक गल हार उतारो, पहिरो हार हजारी।
रतन जडित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी।
मीरा जी थे चलो महल में, थांने सोगन म्हारी॥

[मीराबाई]-भाव भगत भूषण सजे, सील संतोष सिंगार।
ओढी चूनर प्रेम की, गिरधर जी भरतार।
ऊदाबाई मन समझ, जावो अपने धाम।
राज पाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम॥

(१५१)

तू मत बरजे माइडी, साधां दरसण जाती।
राम नाम हिरदे बसे, माहिले मन माती॥ टेक॥
माइ कहै सुन धीहडी, कहे गुण फूली
लोक सोवै सुख नींदडी, थूं क्यूं रेणज भूली॥
गेली दुनियां बावली, ज्यां कूं राम न भावे।
ज्यां रे हिरदे हरि बसे, त्यां कूं नींद न आवे॥
चौबास्यां की बावडी, ज्यां कूं नीर न पीजे।
हरि नाले अमृत झरे ज्यां की आस करीजे॥
रूप सुरंगा राम जी, मुख निरखत जीजे।
मीरा व्याकुल विरहणी, आपणो कर लीजे॥

(१५२)

थे तो रँग धत्ता लग्यो ए माय ॥ टेक ॥

पिया पियाला अमर रस का, चढ गई घूमघुमाय,
यो तो अमल म्हांरो कबहु न उतरे, कोट करो न उपाय ।
सांप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेडतणी गल डार ।
हँस हँस मीरा कंठ लगायो ये तो म्हांरे नौसर हार ॥
बिष को प्यालो राणाजी भेज्यो द्यो मेडतणी ने पाय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविंद रा गाय ॥
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सोहाय ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रंग उड जाय ॥

(१५३)

अब नहिं बिसरूँ, म्हांरे हिरदै लिख्यो हरि नाम ।
म्हांरे सतगुर दियो बताय, अब नहिं बिसरूँ रे ॥ टेक ॥
मीरा बैठी महल में रे, उठत बैठत राम ।
सेवा करस्यां साध की, म्हांरे और न दूजो काम ॥
राणोजी बतलाइया कड देणो जवाब ।
पण लागो हरि नाम सूँ, म्हांरे दिन दिन दूनो लाभ ॥
सीप भरयो पानी पिवै रे टींक भरयो अन्न खाय ।
बतलायाँ बोली नहीं रे, राणोजी गया रिसाय ॥
बिष रा प्यालू राणोजी भेज्या, दीनो मेडतणी के हाथ ।
कर चरणामृत पी गई, म्हांरा सबल धणी का साथ ।
बिष को प्यालो पी गई, भजन करे उस ठौर ।

थाँरी मारी ना मरूँ, म्हाँरी राखणहारो और ॥
राणोजी मो पर कोप्यो रे, मारूँ एकन खेल ।
मारयाँ पराछित लागसी, माँ ने दीनो पीहर मेल ॥
राणो मो पर कोप्यो रे, रती न राख्यो मोद ।
ले जाती वैकुंठ में यो तो समझयो नहीं सिसोद ॥
छापा तिलक बनाइया, तजिया सब सिंगार ।
मैं तो सरने राम के, भल निन्दो संसार ॥
माला म्हाँरे देवडी, सील बरत सिंगार ।
अबके किरपा कीजियो, हूँ तो फिर बाँधूँ तलवार ॥
रथाँ बैल जुताय के ऊटाँ कसियो भार ।
कैसे तोडूँ राम सूँ, म्हाँरो भो भो रो भरतार ॥
राणो साँड्यो मोकल्यो, जाज्यो एके दौड ।
कुल को तारण अस्तरो, या तो मुरड चली राठोड ॥
साँड्यो पाछो फेर्‍यो रे, परत न देस्याँ पाँव ।
कर सूरा पण नीसरी, म्हाँरे कुण राणे कुण राव ॥
संसारी निन्दा करे रे दुखियो सब परिवार ।
कुल सारो ही लाजसी मीरा थें जो भया जी ख्वार ॥
राती माती प्रेम की विष भगत को मोड ।
राम अमल माती रहे, धन मीरा राठोड ॥

(१५४)

सीसोद्या राणो प्यालो म्हाँने क्यूँ रे पठायो ॥ टेक ॥
भली बुरी तो मैं नहिँ कीन्हीं, राणा क्यूँ है रिसायो ।

थाँने म्हाँने देह दिवी है, ज्यॉं रो हरि गुण गायो ॥
कनक कटोरे ले विष घोल्यो, दयाराम पंडो लायो।
अठी उठी लो मैं देख्यो कर चरणामृत पायो ॥
आज काल की मैं नहिं राणा, जद यह ब्रह्मंड छायो।
मेड़तियाँ घर जन्म लियो है, मीरा नाम कहायो ॥
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड वेगो धायो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जन को बिड़द बढ़ायो ॥

(१५५)

राणा जी तैं जहर दियो मैं जाणी ॥ टेक ॥
जैसे कंचन दहत अगिन मे, निकसत बाराबाणी ॥
लोक लाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी ॥
अपने घर का परदा कर ले मैं अवला बौराणी ॥
तरकस तीर लग्यो मेरे हिय रे, गरक गयो सनकाणी ॥
सब संतन पर तन मन वारों, चरण कमल लपटाणी।
मीरा को प्रभु राख लई है, दासी अपणी जाणी ॥

(१५६)

हेली म्हाँ सूं हरि बिन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
सासु लडे मेरी ननद खिजावे, राणा रह्या रिसाय ॥
पहरो भी राख्यो चौकी बिठाख्यो, ताला दियो जडाय ॥
पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूं छोडी जाय ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर और न आवे म्हाँरी दाय ॥

(१५७)

राम तने रंग राची, राणा मैं तो सांवलिया रँग राची रे ॥
ताल पखावज मिरदंग वाजा, साधों आगे नाची रे ॥
कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे मदमाती रे ॥
विष का प्याला राणा भर भेज्या अमृत कर आरोगी रे ।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम की दासी रे ॥

(१५८)

मेरो मन हरि सूँ जोर्‌यो, हरि सूं जोर सकल सूँ तोर्‌यो ॥
मेरो प्रीत निरंतर हरि सूँ, ज्यूँ खेलत बाजीगर गोर्‌यो ।
जब मैं चली साध के दरसण तब राणो मारण कूं दौर्‌यो ॥
जहर दैन की घात बिचारी, निरमल जल में ले विष घोर्‌यो ।
जब चरणोदक सुण्यो मरवणा, राम भरोसे मुख में ढोर्‌यो ॥
नाचन लगी जब घूंघट कैसो, लोक लाज तिण का ज्यूँ तोर्‌यो ।
नेकी बदी हूँ सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुस दे मोरयो ॥
प्रगट निसान बजाय चली मे राणा राव सकल जग जोरयो ।
मीरा सबल धणी के सरणे कहा भयो भूपति मुख मोरयो ॥

जिन मारग म्हांरा साध पधारे, उन मारग मैं जास्यां॥
चोरि न करस्यां जिव न सतास्यां, काँई करसी म्हांरो कोय।
गज से उतर के खर नहिं चढ़स्यां, ये तो बात न होय॥
सती न होस्यां गिरधर गास्यां, म्हांरा मन मोह्यो घणनामी।
जेठ बहू को नातो न राणजी, हूँ सेवक थें स्वामी॥
गिरधर कंथ गिरधर धनि म्हांरे मात पिता वोइ भाई।
थें थांरे मैं म्हांरे राणा जी, यूँ कहे मीरा बाई॥

(१६०)

मेरो मन लागो हरि जी सूँ, अब न रहूँगी अटकी॥ टेक॥
गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हांरे हिवड़े खटकी॥
माणिक मोती परत न पहिरूँ, मैं कब की नटकी।
गेणो तो म्हांरे माला दोवड़ी, और चंदन की कुटकी॥
राज कुल की लाज गमाई, साधां के संग मैं भटकी।
नित उठ हरिजी के मंदिर जास्यां, नाच्यां दे दे चुटकी॥
भाग खुल्यो म्हांरो साध संगत सूँ सांवरिया की वटकी।
जेठ बहू की काण न मानूँ, घूँघट पड़ गइ पटकी॥
परम गुरां के सरन में रहस्यां, परणाम करां लुटकी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जनम मरन सूँ छुटकी॥

(१६१)

अब मीरा मान लीज्यो म्हांरी, होजी थांने सहियां बरजे सारी।
राजा बरजे राणी बरजे बरजे सब परिवारी।

कुँवर पाटवी सो भी वरजै, और सेहल्या सारी ॥
सीस फूल सिर ऊपर सोने निंव्लो सोभा भारी।
गले गुजारी कर मे फंकड, नेवर पहिरे भारी ॥
साधुन के ढिग वैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नीच घर जाओ, कुल कू लगाओ गारी ॥
वडा घरां का छोरु कहावो नाचो दे दे तारी।
वर पायो हिंदुवाणी सूरज, अब दिल मे कहा धारी ॥
तार्‍यो पीहर सासरो तार्‍यो, माय मोसाली तारी।
मीरा ने सतगुरु जी मिलिया, चरण कमल वलिहारी ॥

// (१६२)

तेरा कोइ नहिं रोकन हार, मगन होय मीरा चली ॥ टेक ॥
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी।
मान अपमान दोऊ धर पटके, निकली हूँ ज्ञान गली ॥
ऊँचो अटरिया लाल किवडिया, निरगुन सेज विछी।
पचरगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली ॥
वाजूवंद कडूला सोहै, माँग सेंदूर भरी।
सुमिरन थाल हाथ मे लीन्हा, सोभा अधिक भली ॥
सेज सुखमणा मीरा सोवे, सुभ है आज घरी।
तुम जाओ राणा घर अपणे, मेरी तेरी नाहिं सरी ॥

(१६३)

राग वामोद

वरज मे काहू की नाहिं रहूँ ॥ टेक ॥

सुनो री सखी तुम चेतन होइ के, मन की बात कहूँ ॥
साध संगति करि हरि सुख लेऊँ जग सूँ मैं दूरि रहूँ ॥
तन धन मेरो सबही जावो, भल मेरो सीस लहूँ ॥
मन मेरो लागो सुमिरन सेती, सब को मैं बोल सहूँ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सतगुरु सरन रहूँ ॥

(१६४)

राणा जी हूँ अब न रहूँगी तोरी हटकी।
साध संग मोहि प्यारा लागै, लाज गई घूँघट की ॥
पीहर मेड़ता छोड़ा अपना, सुरत निरत दोउ चटकी।
सतगुरु मुकर दिखाया घट का, नाचुँगी देदे चुटकी ॥
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी।
मेरा सुहाग अब मोकूँ दरसा, और न जाने घट की ॥
महल किला राना मोहिं न चहिये, सारी रेसम पट की।
हुई दिवानी मीरा डोलै केस लटा सब छिटकी ॥

(१६५)

अब नहिं मानूँ राणा थाँरी, मैं वर पायो गिरधारी ॥ टेक ॥
मनि कपूर की एक गति है, कोऊ कहो हजारी।
कंकर कंचन एक गति है, गुंज मिरच इकसारी ॥
अनड़ धणी को सरणो लीनो, हाथ सुमिरनी धारी।
जोग लियो जब क्या दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥
साधू संगत महँ दिल राजी भई कटुंब सूँ न्यारी।
क्रोड बार समझाओ मोकूँ, चालूँगी बुद्ध हमारी ॥

रतन जडित की टोपी सिर पै, हार कठ की भारी।
चरण घू घरू घमस पडत है म्हेँ कराँ स्याम सू यारी ॥
लाज सरम सब ही मैं हारी, यौं तन चरण अधारी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भज मागे सभारी ॥

(१६६)

राणाजी मैं गिरधर रे घर जाऊ।
गिरधर म्हाँरो साचो प्रीतम, देखत रूप रभाऊ ॥
रैन पडे तब ही उठ जाऊँ, भोर भये उठ आऊँ।
रैन दिना वा के सग खेलू, ज्यौं रीझै ज्यौं रिझाऊँ ॥
जो वस्त्र पहिराव सोई पहिर, जो दे सोई खाऊ।
मेरे उनरे प्रीत पुरानी, उन बिन पल न रहाऊ ॥
जह बठाव तित ही बैठू, वेचे तौ बिक जाऊँ।
जन मीरा गिरधर के ऊपर वारवार बल जाऊ॥

(१६७)

राणा जी म साँवरे रग राची ॥ टेक ॥
साज सिंगार बाँध पग घु घरू लोक लाज तज नाची ॥
गई कुमिति लइ साध की सगत, भगत रूप भई साँची ॥
गाय गाय हरि के गुन निस दिन काल व्याल सो बाची ॥
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची ॥
मीरा श्री गिरधरन लाल सो, भगति रसीली याची ॥

(१६८)

राणा जी म तो गोविन्द का गुण गास्याँ ॥ टेव ॥
चरणामृत का नेम हमारे, नित उठ दरसण जास्याँ ॥

हरि मन्दिर मे निरत करास्यां, घूघरिया घमकास्यां ॥
राम नाम का जहाज चलास्यां, भवसागर तर जास्यां ॥
यह संसार बाड का कांटा, ज्यां संगत नहिं जास्यां ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, निरख हरख गुण गास्यां ॥

(१६९)

राणा जी मुझे यह बदनामी लगे मीठी ॥ टेक ॥
कोई निंदो कोई विंदो मैं चलूंगी चाल अपूठी ॥
सांकली गली मे सतगुर मिलिया, क्यूं कर फिरूं अपूठी ॥
सतगुरु जी सूं बातज करतां, दुरजन लोगां ने दीठी ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर दुरजन जलो जा अंगीठी ॥

(१७०)

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ॥ टेक ॥
सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सलिगराम गई पाय ॥
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अंचाय ॥
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय।
सांझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ॥
मीरा के प्रभु सदा सहाई राखे विघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पे बलि जाय ॥

(१७१)

राग पीलू

राणा जी म्हाँरी प्रीत पुरवली मैं क्या करूं ॥ टेक ॥
राम नाम निन घडी न सुनावे, राम मिले म्हाँरा हियरा ठराय ।
भोजनियाँ नहिं भावे म्हाँने, नींदडली नहिं आय ॥
विष का प्याला भेजिया जी, जाजो मीरा पास ।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरे रामजी के विस्वास ॥
विष का प्याला पी गई जी, भजन करे राठोर ।
थाँरी मारी न मरूँ, म्हाँरो राखणहारो ओर ॥
छापा तिलक बनाविया जी, मन मे निस्चय धार ।
रामजी काज सँवारिया जी म्हाँने भावें गरदन मार ॥
पेर्यां वासक भेजिया जी, ये हैं चन्दनहार ।
नाग गले मे पहिरिया म्हाँरो, महलाँ भयो उजार ॥
राठाडाँ की धीयडी जी सीसोद्याँ के साथ ।
ले जाती वैकुंठ को, म्हाँरी नेक न मानी बात ॥
मीरा दासी राम की जी, राम गरीब-निवाज ।
जन मीरा की राखजो, कोइ बाँह गहे की लाज ॥

(१७२)

राग अगना

राणा जी थें क्याने राखो मसूं बेर ॥ टेक ॥
राणाजी म्हाँने असा लगत है, ज्यूं बिरछन मे केर ॥
माल घर मेवाड मेरतो, त्याग दियो थाँरो सहर ॥

थाँरे रूस्याँ राणा कुछ नाहिं बिगड़ै, अब हरि कीन्हीं मेहर ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हठ कर पी गइ जहर ॥

(१७३)

राणा जी थाँरो देसड़लो रंग रूड़ो ॥ टेक ॥
थाँरे मुलक में भक्ति नहीं छै, लोग बसें सब कूड़ो ॥
पाट पटंबर सब ही मैं त्यागा, सिर बाँधूँली जूड़ो ॥
माणिक मोती सबही मैं त्यागा, तज दियो कर को चूड़ो ।
मेवा मिसरी मैं सबही त्यागा, त्याग्या छे सक्कर बूरो ॥
तन को मैं आस कबहुं नहिं कीनी, ज्यूँ रण माहीं सूरो ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बर पायो मैं पूरो ॥

(१७४)

राग खम्माच

न भावै थारो देसड़लो जी, रूड़ो रूड़ो ॥ टेक ॥
हरि की भगति करे नहिं कोई, लोग बसें सब कूड़ो ॥
माँग और पाटी उतार धरूँगी, ना पहिरूँ कर चूड़ो ॥
मीरा हठीली कहे संतन से, बर पायो छै पूरो ॥

(१७५)

म्हारे सिर पर सालिगराम, राणाजी म्हारो काईं करसी ॥
मीरा सूँ राणा ने कही रे, सुण मीरा मोरी बात ।
साधों की संगत छोड़ दे रे, सखियाँ सब सकुचात ॥
मीरा ने सुन यों कही रे, सुन राणा जी बात ।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियाँ क्यूँ घबरात ॥

जहर का प्याला भजिया रे, दीजो मीरा हाथ।
अमृत करके पी गई रे, भली करैं दीनानाथ॥
मीरा प्याला पी लिया रे, बोली दोउ कर जोर।
तै तो मारण की करी रे मेरो राखणहारो ओर॥
आधे जोहड कीच है रे, आधे जोहड हौज।
आधे मीरा एकली रे, आधे राणा की फौज॥
काम क्रोध को ढाल के रे, सील लिये हथियार।
जीती मीरा एकली रे, हारी राणा की धार॥
काचगिरी का चौंतरा रे, बठे साव पचास।
जिन मे मीरा ऐसी दमकै, ल्ख तारों मे परवास॥
टाँडा जब वे लादिया रे, वेगी दीन्हा जाण।
कुल की तारण अस्तरी रे, चली है पुष्कर न्हाण॥

(१७२)

राग पीलू

पग घूंघरू बाँध मीरा नाची रे॥ टेक॥
मै तो मेरे नारायण की, आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहै मीरा भई बावरी, न्यात कहै कुलनासी रे।
विष का प्याला राणाजी भेज्या, पीवत मीरा हाँसी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अविनासी रे।

समाप्त

१—त्रिविध ज्वाला=तीनों प्रकारके दुख, अर्थात अदियात्मिक (शारीरिक और मानसिक), आधिदैविक आधी अविर्पध आदि दैव-प्रकोपसे पहुंचाने वाले) तथा आधिभौतिक दुख। गोतम धरण-गौतमकी गृहिणी अहिल्या। अगम तारण तरण=अगम्य संसार सागरसे पार कराने वाले बेड़ेके समान।

२—अविनाशी=परमात्मा। जेताइ=जो कुछ भी। दीसे= दिखाई पड़ता है। धरनि=धरती। उठि जासी=उठ जासी विनश्वर है। चहर को बाजी=संसार चिड़ियोंका खेल जैसा है, जो साम होने ही बसेरेको चल देती है। जुगति=युक्ति, ईश्वर-प्राप्ति का उपाय। आसी=आयगा। जमकी फोरी=मृत्यु का भय, आवा-गमनका भय।

५—कान=मर्यादा।

६—थाने=तुमको। राती=लाल। कुलरा नाती-कुलका नाता। दस्त=हाथ। राती-रत हुआ।

७—खांड=तलवार। फंसी=फासी।

८—खत=ऋणका लेखा, कर्मों का लेखा। नटे=इनकार करना।

१०—मनुओ=मन। वहाय दीजे=दूर कर दीजिये।

१२—यो=इम। थांरी=तुम्हारी।

१३—सरव सुधारण काज=सभी कार्य सुधारने के हेतु।

अपरवल=अपार। निरधारां=निराधारोंके, असहायों के। पेज=ताज।

१४—होजी=अजी। म्हाराज = महाराज, प्रभु, स्वामी। रावली=आपकी। हिवड़ा=हृदय। साज=भूषण।

१५—ज्यूं जानो ज्यूं=जैसे हो वैसे, किसी भी प्रकार। औगणहारी=अवगुणोंसे भरी।

१६—नैणा=नयनों। म्हांने=हमको।

१७—वालद=बैल। छान छवंद=छप्पर छा दिया। चुकंद= खाया। खींच=खिचड़ी। अरो·गयो=ग्रहण करली। परसण = प्रसन्न। पावंद=पाया, खाया। रहंद=रहता है।

१८—इसकी तुलना सूरदास के निम्न पद से करिये—

बसे मेरे नयननि नंदलाल।

सांवरी सूरति माधुरी मूरति राजिव नयन विसाल।

मोर मुकुट मकरा ति कुंडल, चरण तिलक दिये भाल।

शंख चक्र गद पदुम विराजत, कौस्तुभ मणिम नभाल।

बाजूव द जरहके भूषण नूपुर शब्द रसाल।

दास गोपाल मदन मोहन पिय, भक्तन के प्रतिपाल।

१६—जन=भक्त। भीर=संकट। नरहरि=नृसिंह।

२१—सदान=सदना।

२३—वेड़ा=जीवननैया। संसा=संशय। सोग=शोक। निवार=दूर कर। लख चौरासी धार=चौरासी लाख योनियोंमें।

२४—वारे=बाल्यावस्था।

२५—बोर=बेर। भीलणी=शवरी। अचारवती=आचार-विचारसे रहनेवाली। कुचीलणी=मैले-कुचैले वस्त्रवाली। रसकी रसीलणी=प्रेम रस का आनंद लेनेवाली थी। हेत=सम्बन्ध। मूलणी=आनन्द करती थी। गोकुल अहीरणी=गोकुलकी गोपिका।

२६—सतवादी=सत्यवादी। हाड़=हड्डियाँ। गरे=गले। विपसे अमृत करे=बुराईको भलाईमें परिणत कर देते हैं। सूरदास का भी इसी आशय का दोहा है—भावी काहू सों न टरै।

२७—जीवणा=जीवनकाल। कुण=कोई। जंजार=जंजाल प्रपंच। कह=क्या। लार=साथ।

२८ मनकी मैल=मनोविकार। घट में=शरीरमें। विलार विपया=विपय-रूपी बिलार। अभिमान . ठहरात=मिथ्याभिमानमें फूले रहनेकी वजहसे उपदेशादिका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मनिया=मालाके दाने।

२९—लोकड़ियाँ=संसारी लोग। पावलिया=पैर। फिरि आवे सारो गाम रे=यों सारे गांव फिर आते हैं। थाय=हाँ। त्याँ=वहाँ। मुकिने=छोड़कर। वेसी=बैठे। चारे=चारो।

३०—रावलो=आपका। विड़द=विरद। रुढ़ो=उत्तम। पीड़ित पराये प्राण=पराये अर्थात् भक्तों के प्राणों की रक्षा करनेके लिये दुखी होनेवाले। आन=अन्य।

३१—कमल-दल लोचना=कमलदलों के समान लोचनवाले श्रीकृष्ण। पियाल=पाताल।

३२—मनो=मानो। मकर=मगर। कुंडलकी ..मिलन आई=

मकराकृत कुंडलोंकी प्रभा कपोलोंपर फैली हुई है और उन (कुंडल) के ऊपर पड़े हुए अलकोंके प्रतिविम्ब इस (प्रभा) के अन्तर्गत ऐसे जान प ते हैं मानों मीनोंका झुंड अपने सरोवरोंको त्याग कर मगरोंसे मिलनेके लिये आ पहुंचा हो। टौना=टोना। खंजन अरु मधुप मृगछौना=जिसके सामने खंजन, भ्रमर, मीन और मृगशावक सभी हार मान जाते हैं। सुग्रीव=सुन्दर गला। दा मि दुति=अनारकी भांति। छुद्र घंट किंकिनी=घुंघरुदार करधनी।

३३—वसि गो=रम गया। सौं=संग। कालिंदी=यमुना। दुवरवां=द्वारपर।

३५—वौराय=पागलपन।

३८-करणां=करुण प्रार्थना। भेरी पहुंचानेवाले। रूम-रूम=रोम-रोम। साता=शांति। फेरा फेरी=आवागमन।

३६—दोर=दौड़, पहुंच। कवर=कब रे। सी=समान। अकोर = अंकोर, भेंट।

४०—जीओ=भोग लगाओ। आरोगो -स्वीकार करो।

४३—रिदे=हृदय। गूंज = भेदकी बात। चूवा=लाल। रमवा= खेलने। गल वाटी=गलवाही।

४४—गुह=गुम। गांसी=वाण। मधुमासी=मधुमक्खी।

४५—कछू=कुछ भी।

४६—माई=सखी। छानी=छिपकर।

४७—लुभाणी=लुभाई हुई हूँ। जैसे पाहण पाणी हो=जिस

प्रकार पानी पर पत्थर। कुमाणी=कमाये, संचित किये। अवध=अवधि, आवागमनका काल। जूण=योनि। ऊधरे=उद्धार पाया।

४८ वसियो=वस गया है। रसियो=रसिक। वा॑=वश। सजूं=मिलनेकी तैयारी करूं। डाको=डंका। कड्यां=कड़ियाँ, जिनसे ढोरकी डोरी खींची जाती है। मोरचंग=मुहचंग, लोहेका बना मुंहसे बजानेका वाजा, जिससे ताल दिया जाता है।

५०—ताली लागी=लगन लग गई। मन री=मनकी। रुणार॥=लालसा। छीलरिये=छिछला तालाव। डाबरिये=बरसाती पानीसे भरे छोटे गड्ढे। कुण=कौन। दरियाव=समुद्र। हाल्यां मोल्यां=हाली मुहाली, नौकर-चाकर। कामदारां=कारपरदाज अफसर प्रबन्धक। जाव=जवाव। कामदारां सू काम दरवार=मुझे राज्याधिकारियोंसे प्रयोजन नहीं, मैं सीधे राजासे बात करूंगी। काच=शीशा। कथीर=राँगा। हीरां री वोपार=हीरेका व्यापार। सीर=सम्बन्ध। परव्यौ=परिचय दिया। छै=है।

५१—वांरो=उसका, अपना। घुरास्यां=बजाना।

५२—हों=मैं। पाम=पाँव।

५३—म्हांरा=मेरा, अपना। रमैया=प्रियतम। तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण=तेरा ही स्मरण और चिन्तन किया करती हूँ। जहां-जहां पांव निरत करूँ री=चलते समय प्रत्येक पग को हरिकीर्तनमें किये गये पदाक्षेपके समान करूँगी।

मकराकृत कुंडलोंकी प्रभा कपोलोंपर फैली हुई है और उन (कुंडल) के ऊपर पड़े हुए अलकोंके प्रतिबिम्ब उस (प्रभा) के अन्तर्गत ऐसे जान प ते है मानों मीनोंका झुंड अपने सरोवरोको त्याग कर मगरोसे मिलनेके लिये आ पहुचा हो। टौना=टोना। खंजन अरु मधुप मृगछौना=जिसके सामने खंजन, भ्रमर, मीन और मृगशावक सभी हार मान जाते हैं। सुग्रीव=सुन्दर गला। दाडिम दुति=अनारकी भाँति। छुद्र घंट किंकिनी=घुघरुदार करधनी।

३३–बसि गो=रम गया। सों=संग। कालिंदी=यमुना। दुवरवां=द्वारपर।

३५–बौराय=पागलपन।

३८ करणाँ=करण प्रार्थना। भेरी पहुचानेवाले। रूम-रूम=रोम-रोम। साता=शांति। फेरा फेरी=आवागमन।

३६–दोर=दौड़, पहुच। कबर=कर रे। सी=समान। अकोर=अंकोर, भेट।

४०–जीओ=भोग लगाओ। आरोगो –स्वीकार करो।

४३–रिदे=हृदय। गूंज=भेदकी बात। चूवा=लाल। रमवा=खेलने। गल बाटी=गलवाही।

४४–गुह=गुम। गाँसी=बाण। मधुमासी=मधुमक्खी।

४५–कछू=कुछ भी।

४६–माई=सखी। छानी=छिपकर।

४७–लुभाणी=लुभाई हुई हूँ। जैसे पाहण पाणी हो=जिस

प्रकार पानी पर पत्थर। कुमाणी=कमाये, संचित किये। अवध= अवधि, आवागमनका काल। जूण=योनि। ऊधरे=उद्धार पाया।

४८ - वसियो=वस गया है। रसियो=रसिक। वाड़= वड़ा। सजूं=मिलनेकी तैयारी करूं। डाको=टंका। कड़्यां= कड़ियां, जिनसे ढोरकी डोरी खींची जाती है। मोरचंग=मुहचंग, लोहेका वना मुंहसे वजानेका वाजा, जिससे ताल दिया जाता है।

५०—ताली लागी=लगन लग गई। मन री=मनकी। उणारथ=लालसा। छीलरिये=छिछला तालाव। डावरिये= वरसाती पानीसे भरे छोटे गड्ढे। कुण=कौन। दरियाव= समुद्र। हाल्यां मोल्यां=हाली मुहाली, नौकर-चाकर। कामदारां= कारपरदाज अफसर प्रवन्धक। जाव=जवाव। कामदारां सू काम···दरवार=मुझे राज्याधिकारियोंसे प्रयोजन नहीं, मैं सीधे राजासे वात करूंगी। काच=शीशा। कथीर=रांगा। हीरां री वोपार=हीरेका व्यापार। सीर=सम्वन्ध। परन्यौ=परिचय दिया। छै=है।

५१—वांरो=उसका, अपना। घुरास्यां=वजाना।

५२—हीं=मैं। पाम=पांव।

५३—म्हारा=मेरा, अपना। रमैया=प्रियतम। तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण=तेरा ही स्मरण और चिन्तन किया करती हूँ। जहां-जहां पांव निरत करूँरी=चलते समय प्रत्येक पग को हरिकीर्तनमें किये गये पदाक्षेपके समान करूँगी।

५४—ओलूंड़ी=याद ।

५५—दिवला=दिया । मनसा=मन । पटियाँ=पाटी ।

५६—उदक=जल । दादुर=मेंढक । पीनवत=मोटा । न संचरें=फायदा न करे ।

५७—मीठा बोला=मधुरभाषी । तमोला=ताम्बूल । कर धर रही कपोला=कपोलपर हाथ रखे चिंतित खड़ी हूँ ।

५८—पलका=पलंग ।

५९—बैस=आयु । कौल=प्रतिज्ञा । कद=कब । सनेस=स्नेह ।

६१—जीजे=जीवित रहूँ ।

६२—लँगर=नटखट ।

६३—कुसुमल=कुसुंभी रंगकी, लाल । दरयाई=रेशमी पतली साटन । लेंगो=लहंगा । ऊभी=खड़ी ।

६४—काठ=कठिन । मन काठ कियो=मन कठोर बना लिया । कैसे करि=किस प्रकार ।

६५—पासी=फाँसी ।

६७—ऊभी=खड़ी । ने=और । याथरी=चद्दर । पछेड़ी=पिछवई । दहींडी=एक मिठाईका नाम । एलची=इलायची । रमवा=रमण करने । तम ने. आँखड़ी=तुमको देखकर मेरी आँखें ठंडी हुईं ।

६८—साऊ=रक्षक । कड़ी=कड़वी । डिगी=डगमगाती हुई । धड़ी=पसेरी ।

६६—पाट=परदा, घूँघट। साँझ लग परभात=संध्यासे लेकर प्रभात तक का समय आ गया। अबोलना=अनबोला। काहे की=कैसी। कुसलात=कुशल। उघडि=उभड।

७०—थेँ=तू। छो=हो (सम्बोधन)।

७१—मिलण रो=मिलने का। घणो उमावो=बडी उमग। बाटडियाँ=बाट मार्ग। पासड़ियाँ=पास। आंटडियाँ=टेढापन। आसडियाँ=आशामे।

७३—नातो=नाता। पानाँ=पान। पिंड रोग=पाँडु रोग। छाने=छिपकर। लाँघन=उपवास। बावल=बाजाने। करक=हड्डी। आइ=आकर। साम्हले=सुन लेगी। खिण=क्षण।

७४—आरति=चाह। पाटी पारॅं सवारों हो=ज्ञान द्वारा तत्वबोध प्राप्त करने और शुद्ध बुद्धि द्वारा अपना मार्ग निश्चित करूँ।

७५—आवडे=सुहाती है। धान=अन्न। झूरताँ=शोकावेगमे।

७६—नसानी=नष्ट हो गई। विहसी=बतीत हो गई। वेदन=वेदना।

७७—ढुलावे=इधर उधर डुलाती है, बेचैन किये रहती है। दाय=पसद। अलूनी=फीकी। ऊलर होइ आई=चढ आई। कुण=कौन। बुताव=बुझाव, शात करे। बतलाने=बात करे।

७८—परभात=सवरा। चमक=चोक।

७९—पपइया=पपीहा। चितारो चेतारो=चेत किया, याद किया। छो=थी। दाझ्या=जले हुए। लूण=लवण, नमक।

हिवड़े=हृदय। सारो=चलाया। हिवड़े करवत सारो=हृदय पर आरा चला दिया। उठि बैठो =जा बैठा। बोल बोल कंठ सारो =पीपीकी रट लगाकर अपना गला फाड़ डाला।

८० – पावेली = पावेगी। राल़ैली = डालेगी। चाँच = चोंच। मेला = मिलन। धान = धान्य, अन्न।

८१ – निरमोहड़ा = निर्मोही। छी = थी। अंवली = अन्य ही, दूसरी।

८३ — जासी = चला गया। खातर = खातिर, वास्ते। करवत = लूँगी कासी = कासीमें करवत अर्थात् आरेसे गला कटा लूँगी।

८४ – ज्यूँ जाने त्यूँ = जैसे बन पड़े वैसे। रावरी = आपकी।

८५ – बहुरि = लौटकर।

८७ — भ्रौन = घर, हृदय। वह गइ करवत भ्रौन = हृदयपर आरी चल गई।

८८ — बान = स्वभाव। जीवन मूल जड़ी = वे जीवनकी औषधिके समान हैं, अर्थात् जीवनके आधार हैं।

८६ – आज्यो = आ जाओ। हूँ = मैं। जन = दासी। अवध= अवधि। वदीती = बीत गई। दुतियन = दूसरों। दोरे = कठिन हो गया।

६१ – वारी-वारी = बलिहारी जाती हूँ। आज्यो=आ जाओ। तक़सीर = अपराध।

६२—यार = प्रियतम। वार = वाल।

६३ – खारा = फीका, नीरस। थाँरा = तुम्हारा।

९४ - विरह विथा=विरहाग्नि। छोड़्यॉं नहिं वनैं=त्याग देनेसे काम नहीं चलेगा।

९५—आस्यॉं=होयेगी। मामा=शाम। सरैं=पूर्ण होते हैं।

९६—अगुना = निर्गुण।

९७ - याकुल व्याकुल = अत्यन्त व्याकुल। वैणा = वचन।

९८—सुण = सुन।

१००—नी = की। हेम नी = सोनेकी। काचे ते तांत = कच्चे तागेसे अर्थात् प्रेमकी डोरीसे। जेम = जैसे, जिस ओर। तेमनी = वैसे ही। जेम खींचे तेमनी रे = जिस ओर खींचता है, उसी ओर खिचती हूँ। सुम = मनोहर। एमनी = ऐसी ही।

१०१—सारो = वस। ललिता = सखी। पतियारो = विश्वास करो। मोरचंद = मोरका पंख।

१०२ कसुम्बी = कुसुमके रंगकी, लाल।

१०३—ने = को। सनेसो = संदेशा। गुझ वाती = गुप्त वात। जान वूझ गुझ वाती = जान बूझकर मौन धारण कर रखा है।

१०४—पेसखाना = पेशखेमा।

१०५—साथी = मित्र, श्रीकृष्ण। नैन नीरज = कमलनैन। अंव = पानी। पाना=पान। झोलैं = झोका। मनैं = मुझको। सांकड़ारी = संकटमें।

१०६—धरांई—धड़क रहा है। झरांई = झर-झर आंसू वह रहे हैं।

१०७ - रसलोना = सलोना।

१०८—औरहि और = कुछका कुछ अंडबंड।

१०९—अक्रूर = कंसका दूत जो कृष्णका चचा लगता था और उन्हें रथपर चढाकर वृन्दावनसे मथुरा गया था।

११०—जलकी धुरी = जलके घूमनेसे भंवर पड जाती है। मदकी हस्ती = मस्त हाथी।

१११—मोसूँ = मुझसे। ऐंडो = ऐंठता हुआ। डोले हो = चलता है।

११२—मना=मन। राग छतीसूँ=छ राग व तीस (रागनियाँ)।

११४—खारी=फीकी। कारी=स्याह पड गई हूँ। इकतारी= इकतारा। कंथ=कंत। जर=ज्वर। मेहर=कृपा।

११५—जोय=जलाकर। विरियाँ=अवसर।

११६—गैली=पगली। म्हेली=डार रखा है। पहिली= पहले, आरम्भमें। तालावेली=बेकली। दुहेली=दुखी।

११७ —तलक=तिलक। तमोली=ताम्बूल। दोरी=दुखी।

११८—मधुरिया=सुहावना। झड लायो=बरस रहा है। फूँकै=फुफकार मारता है।

११९—झरी=आँखोंसे आँसू झरने लगे। एक धरी=एक धार होकर। भोम=भूमि। वार=बाहर।

१२०—ज्यो-जो।

१२१—दाँमन चीर=चीरका दामन। सावणियो=सावनकी

मेघमाला। छ्म रह्यो=छा रही है। दोने=देओ। वलवीर=वलदेवके भाई, श्रीकृष्ण।

१२३—जोऊँ=देखती हूँ।

१२४—विलमाई=लुभाकर रोक रखा। सवाई=विशेष रूपसे। पुरवाई=पुरवा।

१२५ – पुरवलो=पूर्व जन्मका।

१२६—सरमाई=वहार।

१२७—गणगोर=चैत्र शुक्ला तृतीयाको होनेवाला गौरी व्रतका त्योहार। छे=है। जोर=शक्ति, दृढ़ विश्वास।

१२८ – हंस=आत्मा। छिमता=क्षमता अथवा क्षमा। कॉकण=कंगन। मुन्दरो=मुन्दरी, अंगूठी। दुलड़ी=दो लड़ोंकी माला। दोवड़ो=गहना। मेख=चोंच, जो दाँतोंमें सोनेका मढ़ाया जाता है। अगोटा=गहना। भूठणो=स्नान। वेसर=नाकका गहना, यह नथसे छोटा होता है और इसमें मोती और रत्न जड़े रहते हैं। जौहर=गहना। निरत=अनुरक्ति। घूँघरो=घूँघरदार गहना। गज–गजमुक्ताकी माला। राखड़ी=चूड़ामणि। आखड़ी=उदासीन।

परमात्माकी प्राप्ति के लिये जिन गुणोंकी आवश्यकता है, मीरांबाईने षोड़श शृंगारके रूपक द्वारा उन्हें व्यक्त किया है। परन्तु इस पदमें उल्लिखित षोड़श शृंगार इस प्रकारके शृंगारकी साधारण परिभाषासे मेल नहीं खाते। हिंदी शब्दसागरके अनुसार षोड़श शृंगार निम्न प्रकार होते हैं:–

अंगमें उबटन लगाना, स्नान करना, स्वच्छ वस्त्र पहनना, केश संवारना काजल लगाना, मांगमें सिंदूर भरना, पैरोंमें महावर देना, माथेपर तिलक देना, ठोढीपर तिल वनाना, मेंहदी लगाना, सुवासित वस्तुओं इत्र आदिका प्रयोग करना, आभूषण पहनना, फूलमाला पहनना पान खाना, मिस्सी लगाना, होठोंको लाल वनाना।

१२६– वानाँ=वाण। विरह लगायके=विरहमें भिगोकर। पावन पंगा=पांवोसे पंगुकर दिया। रूम रूम=रोम रोम। जस्या=जैसा।

१३० नो=का। साक्ट=भक्तिहीन। थासे=हो जायगा।

१३१ मनसा=मनुष्य। वहुर न आती=वार-वार नहीं हुआ करता। मोसर=अवसर। सुँज=सूझ गई। पिछाणी= पहचान, भेदकी वात। नातर=नहीं तो। औराँ सूँ=औरोंसे।

१३२ – मनमानी=मनमें वैठ गई। सुरत=स्मृति। असमानी= ईश्वरीय। विहानी=बीत गई। पिछानी=पहचाननेवाला। खानी=खानि, उत्पत्ति स्थान, योनि। सहदानी=निशानी।

१३३ मोटी=पूरी। नीरांत=भरोसा। थई=हुआ। सामलो= श्यामसुन्दर। सांचु-पधारा। घडाऊँ=गढवाऊँ। वीठल वर= विट्ठल रूपी वर। चुडलो=चूरा। सिद सोनी=सिद्ध सुनार। झाँझरिया=झाँझन। गलाँ=गला। टीकम=त्रिविक्रम। कुँची= कुँजी। घैणा=गहना। हवे=अव। कांचू=चोली।

१३४ गली=मार्ग। झीना=पतला। सुरत झकोला खाय=

स्मृति परमात्माकी पूर्ण अनुभूतिमें असमर्थ हो जाती है। पैंड-पैंड=पग-पग। जुगन जुगन=युग-युगसे। कबीरने भी इसी प्रकार साधनाका मार्ग अत्यन्त सूक्ष्म बताया है। तुलना कीजिये —

जन कबीरकी शिषर घर बाट सलैली सैल।
पाव न टिकै पपीलका लोगनि लादे बैल॥

१३५—बाल्हा=वल्लभ, प्रियतम। जीं जीं=जिन-जिन। घट=शरीर। कींगरी=छोटी सारंगी जिसे बजाकर कुछ जोगी भीख माँगते हैं। जायसीने भी इसका प्रयोग किया है—तजा राम राजा भा योगी, औ किंगिरी कर गहे वियोगी। कबीरने किंगिरी के स्थानपर रबाबका रूपक बांधा है सब रँग तँत रबाब तन विरह बजावै नित्त। और न कोई सुणि सकै कै साईं कै चित्त।

१३६—राजी=आनन्दित। दीदार दिखाया=दर्शन दिया।

१३७—बनज=बनजारा। नैनन बनज · साहिब पाऊँ=जो मुझे प्रियतम मिल जाँय तो अपनी आँखोंको जो बनजारेकी तरह इधर-उधर भटका करती है, एक जगह ठहरा लूँ। त्रिकुटी .. झरोखा=योगी लोग भृकुटीके मध्यमें नासिकाके ऊपर ध्यान लगाते हैं, और ब्रह्मरंध्रमें ध्यान लगाते हैं, जहाँ आत्माके दर्शन होते हैं।

१३८—पात=किनारे। सांपड़े=निबट कर, हाथ मुँह धोकर। सुरज स्वामी=सूर्य भगवान। बिरँगी=विचित्र। काईं=क्या। असल गँवार—निपट मूर्ख। बारनै=द्वारपर।

१३९—पँड़ो=मार्ग। गैल=रास्ता।

विशेष–कुछ लेखकोंका कहना है कि 'जोगी' शब्दसे मीराने रैदास अथवा अपने दीक्षागुरुका संकेत किया है। कुछ तो यहाँ तक कल्पना करते हैं कि किंवदन्तियोंमें बाल्यावस्थामें मीराँको जिस साधु द्वारा गिरिधरलालकी मूर्त्ति दिये जानेका उल्लेख है, उन्हींको मीराँने 'जोगी' कहकर सम्बोधन किया है। मेरी समझमें हमें इस प्रकारकी कल्पनायें करनेकी आवश्यकता नहीं 'योगी' से हम योगीश्वर श्रीकृष्णका अर्थ ले सकते हैं।

१४१ – उदासी=उदासीन।

१४२ – कुसी=खुशी।

१४३ – प्रीतडी=प्रीति। दुखडा=दुख। सेज=देदी। चंपेली=चमेली।

१४४ – ने=से। आदेश=संदेश। कंथा=योगियोंकी मेखला। खोड=खोल, देह।

१४५ – अतीत=निरपेक्ष। चीत=चित्त, सुध।

१४६ – मिलता जाज्यो=मिलते जाइयेगा।

१४७ – म्हाँने=मुझको। परण=पाणिग्रहण कर गया। गैली=गई गुजरी, मूर्ख। सुवे=अमृतसे। जान=जन, वराती।

१४८ – आण=अस, शपथ। गोरल=गागौर। ओरज=और लोग। गोरज्या=गनगौर। भेव=भेद। माइतणो मोसाल=ननिहाल। मेडतिया मेडताके निवासी, भाईबंद। थाँसू=तुझे। मारगी=रदमारी।

१४९ – गाल=कलंक। ओलंबा=उलहना। थासो ओलंबा=

तुम्हारे घर आकर बसी, इसीसे उलहना मिला। जान = बरात। पावणा=पाहुन। कचोले=कटोरा। ऊभा छे=खड़ा है। वचन न लोप=वचनोंकी उपेक्षा मत करो। भाड़ी=सहायक। रमापति= ईश्वर। भीड़=संकट।

१५१ – माइड़ी=माँ। माहिते=अन्तरमें। माती = मस्त। माहिले मन माती=मैं अपनेमें मगन हूँ। धीहड़ी=बेटी। गुण फूली=गर्वीली। रैणज=रात भर। भूलो=भूली रहती है। चौवास्याँ=चौमासा।

१५२ – धत्ता=गाढ़ा, यहाँ गाढ़ प्रेमसे आशय है। घूम घुमाय=जोरका नशा। मेणत्तणी=मीराँ। नौसर हार=नौलड़ा हार।

१५३ – बतलाइया=पूछा है। कइ देणो जवाब=जवाब कर देना, जवाब दे देना। पण=प्रण। सीप भर्‌यो=सितुही भर, थोड़ा सा। टाँक भर्‌यो=प्रायः चार माशा। बतलायाँ = पूछने पर। सेल=बरछी। पराछित लागसी=प्रायश्चित करना होगा। मेल=भेजना। सिसोद=सिसोदिया वंशी राणा। देवड़ी=भगवान की। भो भो रो=भव-भव कर। भरतार=स्वामी। साँड्यो= साँडिया। मोलल्यो=भेजे। अस्तरी=स्त्री। मुरड़ चली=लौट चली। राठोड़=राठौरके देश। परत न देस्याँ पाँव=कभी पैर न रखूंगी। नीसरी=निकली हूँ। स्वार=स्यार, मीराँ।

१५४ – थाँने म्हाँने·· गायो=तुमको मुझको, दोनोंको ईश्वरने शरीर दिया है, जिससे हरिका गुण गाय। अठी-उठी=इधर-उधर। जद=जब। आज कालकी में छायौ=यह आत्मा अजर अमर

है, जबसे यह सृष्टि आरम्भ हुई, तबसे यह आत्मा भी है। वेगो = वेगसे। विड़द = विरद, यश।

१५५ – बाराबाणी=बारह सूर्यके समान प्रभावाली खरी। गरक=गर्क हो गई। सनकाणी=सनक।

१५६ – दाय=पसन्द।

१५७ – तने=के। आरोगी=पी लिया!

१५८ – जोख्यो=जोड़ा लगाया। गोख्यो=मारवारमें नजरबंद को कहते हैं। ज्यूँ खेलत वाजीगर गोख्यो=जिस प्रकार वाजीगर अपने भेदको गुप्त रखता है उसी प्रकार मैं हरिको हृदयमें गुप्त रीतिसे प्रतिष्ठित किये हूँ। सरवणा=श्रवण, कान।

१५६ – रंग हरी=हरीका प्रेम। औरन परी=औरों (हरीके अतिरिक्त अन्य) का रंग लगनेमें अड़चन पड़ गई। दाय=पसंद। काँई=कोई। कंथ=स्वामी। थें थारेमें म्हरि=तुम अपने रास्ते, मैं अपने रास्ते।

१६० – अटकी=इधर-उधर फँसी हुई। गुठकी=घूँट। हिवड़े= हृदय। परत=कभी। नटकी=अस्वीकार कर दिया है। गेणों= गहना। दोवड़ी=दोहरा। चन्दनकी कुटकी=कंठी। बटकी=मार्ग लिया। काण=लाज। पटकी=त्याग दिया। लुटकी=लटक कर झुक कर।

१६१ – थनें=तुमको। सहियाँ=सखियाँ। कुँवर पाटवी= युवराज। सेटल्या=सहेलियाँ। सोवे=सोहे। गुजारी=गुलूबंद। छोरु=लड़की। माय मोसाली=नानाका घर।

गाल=...

१६३—बरज=रोकने पर। भल=भलेही। लहूँ=ले लो। बोल=ताना।

१६५—गुंज=घुंघची। करां=करी।

१६७—याची=याचनाकी, मांगी।

१६८—वाड़=वाड़ा।

१६९—मीठीयअच्छी, भली। कोई निंदो कोई विंदो=चाहे कोई निन्दा करे या प्रशंसा। अपूठी=अनूठी। बातज=बातें। दीठी=देखा।

१७०—अंचाय=पी कर।

१७१—ठराय=शीतल होता है। राठोर=राठौड़ कुल की। पेयां=संदूक। वासक=सांप। धीयड़ी=बेटी।

१७२—क्यांने=क्यों। मसूं=मुझसे। वेर=वैर। असा=ऐसा। बिरछन=वृक्ष। केर=करील का पेड़। मारु=मेरा। रूस्यां=रूसनेसे, कुपित होने से। हरि कीन्हीं मेहर=हरि ने मुझे अपनी प्रियतमा बना लिया।

१७३—देसड़लो=देशका। रूड़ो=बुरा। कूड़ो=निम्न कोटि के। जूड़ो=जटा।

१७४—थारो=आपका। देसड़लो=देश, राज्य (राणाके देशसे आशय है), रूड़ो-रूड़ो=बुरा-बुरा। कूड़ो=अप्रज्ज्वल। चूड़ो=हाथी दांतकी चूड़ियां।

१७५—जोहड़ = घड़ा। तालाब या झील। धार = फौज
पाचगिरी = दिल्लौर। अस्तरी = स्त्री।

१७६—नारायण = कृष्ण, प्रियतम। न्यात = नातेदार
हाँसी = हँसी।

१७५—नोहड = बड़ा तालाब या झील। धार-पे

पाचगिरी = निल्लौर। अस्तरी = स्त्री।

१७६—नारायण = कृष्ण, प्रियतम। न्यात = नाे

हाँसी = हँसी।